Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मा पच्छ असाहुया भवे
अच्चेहि अणुसास अप्पगं।

मरणकाल में शोक या अनुताप न हो इसलिए तू काम-भोगों का अतिक्रमण कर अपने को अनुशासित कर।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 43 • 1 - 7 अगस्त, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-07-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त होने का एकमात्र उपाय है मोक्ष की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २२ जुलाई, २०२२

साधना के श्लाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम सरिता का रसपान कराते हुए फरमाया कि भगवती में चार प्रकार के संसार अवस्थान प्रज्ञप्त हैं। नैरियक, तिर्यंच, मनुष्य और देव संसार अवस्थान। संसार में दो प्रकार के जीव होते हैं–सिद्ध और संसारी। सिद्ध जीव तो अशरीरी है। संसारी यानी संसरण करने वाले जीव। जन्म-मृत्यु करने वाले।

संसारी जीव चार गतियों में विभंग हैं–नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव। संसारी जीव एक भव से दूसरे भव में जन्म लेते रहते हैं। यह जन्म-मरण का चक्र अनादि कालीन है। कई जीव तो ऐसे हैं, जो आज तक वनस्पतिकाय में ही हैं, बाहर निकले ही नहीं हैं। अनेक जीव ऐसे भी हैं जो इन चारों गतियों में जाते हैं।

एक दार्शनिक विचार मान्यता रही है, जो भगवान महावीर के समय भी थी–जो जीव जैसा है, वो जन्मांतर में भी वैसा ही रहता है। यह जन्मांतर सादृश्यवाद है। इस सिद्धांत के समर्थक आर्य सुधर्मा रहे हैं। उनके दीक्षा लेने से पहले की बात है, वो पहले पंडित थे। इस सिद्धांत के अनुसार गति और योनी में कोई परिवर्तन नहीं होता।

हमारे यहाँ आगम वाङ्मय है, जैन दर्शन के संदर्भ में ध्यान दें तो दो शब्द आते हैं–कायस्थिति और भवस्थिति। कायस्थिति यानी एक ही काय या जाति में निरंतर जन्म

लेना। एक जीवन की आयु स्थिति है, वो भव स्थिति कहलाती है। देवता आयुष्य संपन्नता के बाद वापस देवता नहीं बन सकते, नरक के नारकीय जीव भी नरक का आयुष्य पूरा करके वापस नरक में नहीं जा सकते हैं। उनके भव स्थिति ही होती है।

हमारे यहाँ बताया गया है कि एक मनुष्य है, वो सात-आठ भवों तक पुनः मनुष्य-मनुष्य बन सकता है। आर्य सुधर्मा का सिद्धांत आंशिक रूप में यहाँ फिट हो सकता है। मनुष्य और तिर्यंच पंचेंद्रिय कई जन्मों तक उसी गति में पैदा होता है, रहता है, पर हमेशा ही वैसा रहेगा, यह नियम जैन दर्शन में मान्य नहीं है। अनेकांत के आधार पर थोड़े अंशों में मान्य हो सकती है।

चार गतियों का हमारा संसार है, जिसमें आत्मा जन्म-मृत्यु लेती रहती है, जब तक मोक्ष न हो जाए। अभव्य जीव तो हमेशा जन्म-मरण करते ही रहेंगे। उनको तो कभी मोक्ष मिलने वाला है ही नहीं। अभव्य जीव देवगति में जा सकते हैं, नौग्रैवेयक तक पैदा हो सकते हैं, साधु भी बन सकते हैं, पर वे मोक्ष में नहीं जा सकते। इसलिए निश्चय में नहीं कहा जा सकता कि कौन भव्य जीव है, कौन अभव्य जीव।

जीव भव्य है या अभव्य है, यह पाप कर्म के आधार पर नहीं है, यह तो अनादि-अनंत काल से पारिणामिक भाव है। इनको बनाने वाला कोई नहीं है। यह एक नियतिवाद का सा सिद्धांत है। अभव्य हमेशा अभव्य ही था, भव्य हमेशा भव्य ही था। कर्म या पुरुषार्थ के योग से नहीं हैं। यह जीव क्यों? यह अजीव क्यों? यह पारिणामिक भाव है, जो अनंत काल से चला आ रहा है।

ये जो चार गतियाँ हैं, इनसे छुटकारा कैसे मिले। चारों में भी जब तक संसार में है, दुर्गति में तो न जाना पड़े। नरक-तिर्यंच में न जाना पड़े यह धातव्य है। नरक हमारी धरती से नीचे है, जो सात है। देवलोक अधिकांश हमारी धरती से ऊपर है, कुछ नीचे भी है। हमारी दुनिया में भी आसपास रहने वाले देव हो सकते हैं।

स्थावर काय और त्रसकाय के जीव मनुष्य लोक में है, जो इन चारों गतियों में आत्माएँ भ्रमण करती हैं। इस भ्रमण से छुटकारा मिल जाए, यह चिंतन का महत्त्वपूर्ण विषय है। साधु जीवन लेना है, उसका भी मूल लक्ष्य यही है कि जन्म-मरण की परंपरा से हमारी आत्मा को छुटकारा मिले।

आत्मा स्वर्ग में जाए बड़ी बात नहीं, आत्मा मोक्ष में जाए तब खास बात है। स्वर्ग से तो वापस नीचे आना पड़ेगा ही। स्वर्ग-नरक हमारे संसार के ही स्थान हैं। हमारे जीवन में भी हम कुछ अंश में नारकीय जीवन का अनुभव कर लें, कभी स्वर्गतुल्य सुखों का अनुभव कर लें। साधु को तो इतना सुख मिलता है कि वो देवों से भी आगे बढ़ जाए।

(शेष पृष्ठ २ पर)

व्यक्ति गृहस्थ जीवन में भी अनासक्त रहने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २३ जुलाई, २०२२

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने निर्ग्रन्थ प्रवचन की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है कि भंते! क्या जीव अंतक्रिया करता है? भगवान ने फरमाया गौतम! कोई जीव अंतक्रिया करता है, कोई अंतक्रिया नहीं भी किया करता है। अंतक्रिया का मतलब है, सब दुःखों का अंत करना। यह अवस्था अंतिम है। जन्म और मृत्यु का पर्युवसान हो जाता है। कोई क्रिया नहीं होती है।

आत्मा तेजस और कार्मण शरीर से मुक्त हो जाती है। यह अंत में होने वाली क्रिया होती है। संसार में दो प्रकार के जीव हैं। कुछ जीव ऐसे हैं, जो कभी न कभी मोक्ष में जाएँगे। कोई-कोई जीव ऐसे बहुत हैं जो अभव्य हैं, जो कभी मोक्ष में जाने लायक ही नहीं हैं। अंतक्रिया मोक्ष में जाने की सी क्रिया है।

सर्व दुःखमुक्ति की स्थिति अंतक्रिया से प्राप्त हो जाती है। संसार में प्राणी डरता भी है। प्राणी दुःख से डरता है। दुःख से आदमी बचने का प्रयास भी करता है। दुःख का समूल नाश हो जाए कि फिर कभी दुःख पाना भी न पड़े। जब तक आदमी के भीतर कषाय है, तृष्णा है, लोभ-विकार है, तब तक मानना चाहिए दुःख का मूल विद्यमान है। जब तक राग-द्वेष है, तब तक दुःख हो सकता है।

भगवान ऋषभ ने गृहस्थ का जीवन भी जीया, अपने ढंग से सेवा भी की। प्रशिक्षण भी दिया। लोक उपकार का कर्तव्य समझकर सावद्य कार्यों का भी प्रशिक्षण दिया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 अगस्त, 2022

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अकाम निर्जरा से भी मिल सकती है देवगति : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल, छापर, १६ जुलाई, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तीर्थंकरों की वाणी की विवेचना करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में गौतम स्वामी परम प्रभु से प्रश्न कर रहे हैं कि भगवन्न! ये, जो प्राणी हैं, तिर्यंच-मनुष्य भी हैं, जो असंयत है। त्याग-प्रत्याख्यान कुछ भी नहीं है। कोई पाप करने का प्रत्याख्यान नहीं ले रखा है। ऐसे जीव मृत्यु को प्राप्त होते हैं, तो मरकर क्या वे देवलोक में उत्पन्न हो सकते हैं।

भगवान ने उत्तर फरमाया कि गौतम! इनमें से कुछ-कुछ देव बन सकते हैं, कुछ-कुछ देवता नहीं भी बन सकते हैं। वापस पूछा गया—भगवान! इसका क्या कारण है? उत्तर दिया गया—गोयम! ये कई मनुष्य आदि जीव हैं, जो गाँवों में, नगरों में, राजधानी में आदि विभिन्न स्थानों में रहते हैं। इन मनुष्यों के जीवन में कोई त्याग-संयम नहीं है। सामान्य लोग हैं। ये जो लोग हैं, उनके कईयों के अकाम निर्जरा हो सकती है।

जैसे मजदूर लोग आदि जो हैं, वे सर्दी-गर्मी, प्यास आदि को सहन करते हैं, परिवार से दूर रहते हैं, खाने-पीने का पता नहीं है, ये कष्टों को झेलते हैं, परंतु इनका लक्ष्य कोई साधना या मुक्ति नहीं है। सहज भाव से उनको सहन करते हैं। अनायास उनके संयम हो जाता है। यह जो अकाम निर्जरा हो जाती है। कई पशुओं में भी ऐसे कष्ट आते हैं, वे भी सहन करते हैं। सैनिक व नौकर-चाकर भी सहन करते हैं। इस अकाम निर्जरा के कारण से फिर वे देवगति के आयुष्य का बंध कर लेते हैं।

ऐसे ये मनुष्य-तिर्यंच आदि प्राणी वाणव्यंतर देव गति में पैदा हो जाते हैं। ऐसे जीव ज्यादा पाप भी नहीं करते हैं। देवगति में पैदा होने के चार कारण बताए गए हैं—सराग संयम, संयमासंयम, वालतप और अकाम निर्जरा। अकाम निर्जरा एक कारण बनता है, देवगति में पैदा होने का। निर्जरा है, तो पुण्य का बंध मान लें। सहन करने से सहज संयम हो जाता है। इसलिए मनुष्यों से ज्यादा संख्या में देव होते हैं।

आगम की वाणी से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि धर्म को नहीं जानने वाले लोग हैं, जीवन में सात्त्विकता है, अकाम निर्जरा होती है, तो वे देवगति में जाकर पैदा हो सकते हैं। आदमी सहन करे। उपासक श्रेणी के लोग बैठे हैं। उपवास को निर्जरा में लिया गया है। पर श्रावक या साधु ने तो त्याग किया है, संवर होना चाहिए। आचार्य भिक्षु ने बताया है कि ऐसे तो उपवास संवर है, पर उपवास में भूख-प्यास लगती है, वे सहन करते हैं, तो निर्जरा होती है, इसलिए उपवास को अनशन निर्जरा में लिया गया है।

ग्रंथ में एक कारण यह भी बताया गया है कि किसी के बीमारी हो जाती है, सहन करता है, ऐसे दीर्घकालीन जो रोग है, उनको जो झेलता है, ऐसा व्यक्ति भी देवगति का आयुष्य बंद कर सकता है। सम्यक् दृष्टि वाला सम्यक्त्व में आयुष्य का बंध करेगा तो वह तो वैमानिक देवगति का बंध करेगा। मिथ्यात्वी व्यक्ति अकाम निर्जरा कर वाणव्यंतर देवगति में पैदा होते हैं।

सम्यक्त्व अवस्था में जीव नरक गति, तिर्यंच गति, स्त्री वेद, नापुंसक वेद, भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क का आयुष्य बंध नहीं करेगा। इस तरह सात चीजों का वर्णन हो जाता है, वह वैमानिक गति का ही बंध करता है। सम्यक्त्वी होकर सहन करें, फिर तो कहना ही क्या? बहुत ज्यादा लाभ मिल सकता है।

जयाचार्य ने आराधना की ढाल में कहा है—सम्यक्त्व और चारित्र है, फिर वेदना को सहन करेंगे तो बहुत लाभ मिल सकता है। इस सूत्र का निष्कर्ष है—सहन कर लेना। लाभदायी तत्त्व होता है। आदमी अनुकूलता-प्रतिकूलता मे सहन करे, शांति रखे। अधीर न बने। स्व-अवस्था में सहन करना और बड़ी बात हो जाती है। साधु कितना सहन करते हैं।

निर्जरा निरंतर होती रहे। आदमी प्रावलंबन से बचें। आगम में बताया गया है कि जो अकाम निर्जरा करते हैं, जो मिथ्यावी है, असंयमी है, वे भी अकाम निर्जरा द्वारा वाणव्यंतर देवगति के आयुष्य का बंध कर सकते हैं।

कालू यशोविलास की व्याख्या करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि बालक कालू दीक्षा ले रहा है, हमारे धर्मसंघ को एक भावी आचार्य प्राप्त हो रहा है। दीक्षा के समय के अनेक प्रसंगों को परम पावन ने विस्तार से समझाया।

मुनि वर्धमान जी ने गीतिका का संगान किया। मंजु दुधेड़िया ने अठाई का प्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि साधना में शंका नहीं करनी चाहिए।

जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त होने का एकमात्र...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जो कषाय मुक्त हो गया है या कषायमंद है, तो वह सुखी रह सकता है। देवता भी भीतर से सुखी रह सकते हैं। सुख का मूल है कि चेतना कितनी निर्मल है। गृहस्थ जीवन में भी कई बड़े सुखी हो सकते हैं, साधु तो सुखी होते ही हैं। भीतर में शांति है, वो सुखी है। साधु तो नहीं, साधु तुल्य उनका जीवन होता है। यह भी महत्त्वपूर्ण है।

भगवती में चारों गतियों के बारे में बताया गया है ये चार अवस्थान काल है। इनमें आत्मा भ्रमण करती है। हमारा लक्ष्य यह हो कि चारों गतियों से हमको छुटकारा मिल जाए, परम मोक्ष स्थान प्राप्त हो जाए।

कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए परमपूज्य ने फरमाया कि मघवागणी के बाद माणकगणी हमारे आचार्य होते हैं। मुनि कालू उनकी निश्रा में यात्रा कर रहे हैं। सरदारशहर, चुरू, बीदासर, चतुर्मास कर वि०सं० १९५३ का चतुर्मास सुजानगढ़ में हो रहा है। वहाँ एक विशेष बीमारी से माणकगणी ग्रसित हो जाते हैं। शरीर कमजोर पड़ जाता है। कई संत मिलकर गुरुदेव से भावि व्याख्या के बारे में अर्ज करते हैं। एक दिन अचानक कार्तिक बदी ३ को उनका महाप्रयाण हो जाता है। संघ नाथविहीन हो जाता है। मुनि कालू को माणकगणी के सान्निध्य में लगभग साढ़े चार वर्ष रहने का मौका मिला।

पूज्यप्रवर द्वारा उपासक श्रेणी को दी गई विशेष प्रेरणा -

आचार्यप्रवर ने उपासक श्रेणी को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि उपासक शिविर में भी जो संभागी हैं। वे संसार में रहते हुए वेशभूषा से साधु लग रहे हैं, क्योंकि त्याग, संयम, नियम, तत्त्व का ज्ञान, इधर थोड़ा जीवन में कषाय की मंदता संतोष जीवन में।

उपासक है, कुछ अंशों में साधु जैसे बन सकते हैं, और साथ में तत्त्व ज्ञान है और भी ज्ञान है, प्रेक्षाध्यान आदि जानते हैं, भाषण कला, गायन कला अच्छी है, तो लोगों को लाभ दे सकते हैं। लाभ देने वाले देते भी हैं। पर्युषण आदि और कितना लाभ बिना पर्युषण के भी क्लासें, शिविर आदि कराकर किसी रूप में लाभ दे सकते हैं।

धार्मिक दृष्टि से क्षेत्रीय सार-संभाल कर लेते हैं, तो थोड़ा अंशों में साधु का सा काम मानो कर देते हैं। यों उपासक श्रेणी विविध-उपयोग वाली भी कुछ अंशों में सिद्ध हो सकती है। उपासक श्रेणी के सदस्यों का जीवन है, वे परिवार में, समाज में, घर में रहते हुए भी आंशिक रूप में साधु जैसा जीवन जीने वाले हो सकते हैं, उनकी आत्मा का भी अच्छा उत्थान भी हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जीवन में सीधा चलना बड़ी बात नहीं है। हमें प्रतिस्त्रोतगामी बनना है।

मुमुक्षु दक्ष एवं मुमुक्षु अश्विन को दीक्षा का आदेश

संयमप्रदाता ने असीम कृपा बरसाते हुए मुमुक्षु अश्विन को आज ही मुमुक्षु श्रेणी में प्रवेश दिया। बाद में आज ही साधु प्रतिक्रमण का आदेश प्रदान कराते हुए दीक्षा छापर में प्रदान करने का आदेश फरमा दिया। साथ में मुमुक्षु दक्ष की दीक्षा भी छापर में देने की फरमा दी।

व्यक्ति गृहस्थ जीवन में भी अनासक्त रहने का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वे गृहस्थ अवस्था में थे तो जानते थे कि ये सावद्य काम है, पर उनमें लोकानुकंपा भी थी। उपासक है, जानते तो हैं कि गृहस्थ के सावद्य काम है, परंतु करना भी पड़ता है। जानना अलग बात है, त्यागना अलग बात है। सम्यक् ज्ञान तो हो गया। ये उनका कर्तव्य है, करना पड़ता है।

सम्यक् ज्ञान होना भी बड़ी बात है। गृहस्थ जीवन में रहकर भी निर्लिप्त-अनासक्त रहें। परिवार में रहकर सारे कार्य करने पड़ते हैं। संसार में गृहस्थों के संबंध की दुनिया चलती है। साधु तो संबंधातीत होते हैं। श्रावक साधना में भी आगे बढ़े।

गृहस्थ आरंभजा, प्रतिरोधजा हिंसा तो नहीं छोड़ सकता पर संकल्पजा हिंसा से तो बचें। द्रव्य योग से सावद्य प्रवृत्ति हो सकती है, पर भाव शुद्ध है। तो आत्मा सिद्धत्व को प्राप्त हो जाती है। भगवान महावीर ने कितनी साधना कर केवलज्ञान प्राप्त किया था। अनंत जीवों ने अंतक्रिया कर ली। अंतक्रिया वर्तमान जीवन में तो होनी मुश्किल है। पर अंतक्रिया की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास किया जा सकता है।

साधु और श्रावक रत्नों की माला है। एक बड़ी है, एक छोटी है, पर है रत्नों की। जितना-जितना श्रावक के त्याग है, वो रत्नों की माला है, बाकी तो अव्रत है। गृहस्थ जीवन में भी अनासक्त रहने का प्रयास हो। साथ में धार्मिक साधना-चर्या चलती रहे।

महामनीषी ने कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि पूज्य माणकगणी महाप्रयाण होने के बाद मुनि भीमजी जो रत्नाधिक थे को आज्ञा-आलोयणा, मुनि मगनलालजी को व्याख्यान आदि एवं मुनि कालू अंतरिम व्यवस्था संभालते हैं। चतुर्मास बाद सारा संघ लाडनूं में इकट्ठा होता है। वहाँ मुनि कालुजी बड़ा रेलमगरा को भावी आचार्य की घोषणा करने का दायित्व दिया जाता है। मुनि डालचंदजी की हमारे धर्मसंघ के सातवें आचार्य के रूप में घोषणा करवाई।

जयपुर पंजाब नेशनल बैंक के उच्च अधिकारी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि धर्म की शरण ही संसार में हमारा त्राण बनती है और कोई नहीं।

लेश्या के साथ पुद्गलों का गहरा संबंध है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २१ जुलाई, २०२२

अंतर्चक्षु के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न पूछा गया है कि भगवन! लेश्याएँ कितनी प्रज्ञप्त हैं? उत्तर दिया गया–छः लेश्याएँ बताई गई हैं। २५ बोल के सतरहवें बोल में छः लेश्याएँ उल्लिखित हैं–कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजः लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या।

लेश्या शब्द जैन वाङ्मय में प्रयुक्त हुआ है। एक महत्त्वपूर्ण बात बताने वाला शब्द है। लेश्या का अर्थ–भावधारा, परिणाम धारा किया गया है। लेश्या शब्द श्लेष या लेश रूप में व्याख्यात हुआ है। लेश्या के द्वारा कर्म-पुद्गलों का श्लेश होता है–इसलिए इसका नाम लेश्या रखा गया है। पंच संग्रह ग्रंथ में अर्थ बताया गया है–पुण्य-पाप का लेप होना। लेप करने वाली क्रिया लेश्या है।

नंदी सूत्र की चूर्णि में अर्थ बताया गया है–लेश्या यानी रश्मि। हमारे शरीरों में एक तेजस शरीर भी है, जो हमारे परिणाम हैं, वे तेजस शरीर से प्रभावित होकर विद्युतीकरण को प्राप्त कर हमारे स्थूल शरीर में संक्रांत हो जाते हैं। नाम कर्म की एक प्रकृति है–शरीर नाम कर्म। लेश्या या भावधारा की सरंचना में तीन तत्त्वों का योग माना गया है–शरीर, वीर्य लब्धि और कषाय का उदय।

आदमी या प्राणी में जो शुभ-अशुभ परिणाम होते हैं, वे लेश्या है। ये परिणाम सिद्धों और चोदहवें गुणस्थान में भी नहीं है। जहाँ योग है, वहीं लेश्या है। ये दोनों सहचर है। तेरह गुणस्थानों तक शुभाशुभ भावधारा होती है। लेश्या के साथ पुद्गलों का गहरा संबंध है। अच्छे पुद्गल अच्छे विचारों में परिणित होने में सहायक बनते हैं। बुरे पुद्गल बुरे भावों के होने में सहायक होते हैं।

जैन दर्शन की परिभाषा में जो ये भाव होते हैं, जो आत्मा से जुड़े हुए होते हैं, उन्हें भाव लेश्या व सहायक पुद्गलों को द्रव्य लेश्या कहा गया है। इस तरह लेश्या के दो प्रकार भाव लेश्या और द्रव्य लेश्या हो जाते हैं। अपने आपमें आत्मा का स्वरूप तो स्फटिक की तरह निर्मल है। परंतु जब तक आत्मा कर्म-पुद्गलों से आवृत्त है, तो संसारी अवस्था में उसका रूप विकृत रहता है। ये विकृति सबमें समान नहीं होती है।

प्रश्न है–भावधारा का तारतम्य कितने भागों में होता है। तारतम्य में अनंत गुण अंतर पड़ सकता है, पर उसे स्थूल रूप में समझाने के लिए छः विभाग किए गए हैं। इनमें प्रथम तीन अधर्म या अशुभ लेश्या है, शेष तीन धर्म या शुभ लेश्या है। कृष्ण लेश्या काजल के समान कृष्ण और नीम से अनंत गुणा कटु के संबंध से आत्मा में जो भावधारा होती है, वह कृष्ण लेश्या है। नीलम के समान, सौंठ से अनंत गुणा अधिक तिक्त नील लेश्या है।

कापोत लेश्या कबुतर के गले के समान वर्ण वाली और कच्चे आम से अनंत गुणा कसैली होती है। हिंगुल के समान रक्त और पके आम से अनंत गुणा मधुर रस से आत्मा में जो परिणाम होता है, वह तेजो लेश्या है। हल्दी के समान पीले तथा मधु से अनंत गुणों से आत्मा की जो भावधारा होती है, वह पद्म लेश्या है। शंख के समान श्वेत और मिश्री से अनंत गुणों से मीठे पुद्गलों के संबंध से जो आत्मा का परिणाम शुक्ल लेश्या है।

कृष्ण लेश्या के परिणाम मानसिक, वाचिक, कायिक क्रियाओं में असंयम होता है। कपटपूर्ण व्यवहार व स्वादलोलुप होना नील लेश्या के परिणाम हैं। कार्य करने व बोलने में वक्रता रखना ये कापोत लेश्या के लक्षण है। ममत्व से दूर रहना, धर्म पर रुचि रखना आदि तेजोलेश्या के परिणाम हैं। गुस्सा न करना, मितभाषी होना, इंद्रिय विजय का अभ्यास रखना ये पद्म लेश्या के परिणाम हैं। राग-द्वेष रहित रहना, आत्मलीन रहना, शुक्ल लेश्या के परिणाम हैं।

एक उदाहरण से समझाया कि प्रथम तीन अल्पमत वाली लेश्याएँ हैं एवं शेष तीन बहुमत वाली लेश्याएँ हैं। इसलिए तीन अशुभ और तीन शुभ लेश्याएँ हैं। इस तरह से छः प्रकार से भावधारा को समझाया गया है। लेश्याएँ तो अनंत भी हो सकती हैं।

परम पावन कालूयशोविलास की व्याख्या करते हुए फरमाया कि मुनि कालू को पूज्य मघवागणी के संरक्षण में विकास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पर वह लगभग साधिक पाँच वर्ष ही रहा। मघवागणी कालू-कालू करते हुए शिक्षा का स्नेह बरसा रहे हैं, संस्कृत भाषा का अध्ययन कराने का प्रयास कर रहे हैं। मुनि कालू भी साधुचर्या में जागृत हैं। मघवागणी के महाप्रयाण से फूल की कलियाँ अधखिली रह जाती हैं, मुनि कालू व्यथित हो जाते हैं। उन्हें रह-रहकर गुरु की याद आ रही है।

साध्वीवर्या ने कहा कि हमारे भीतर अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति है। आत्मा के कल्याण के लिए इनकी अनुभूति करनी पड़ती है। कषाय आत्मा के कल्याण में बाधक तत्त्व है। कषाय के दो प्रकार–अहंकार और ममकार होते हैं। जब तक ये हैं, आत्मा अर्हत नहीं बन सकती। नमस्कार महामंत्र जैन शासन का महामंत्र है। अरुहंत, अरिहंत और अरहंत की परिभाषा को विस्तार से समझाया। अर्हत के स्वरूप को समझाया।

मुनि विकास कुमार जी ने तप की प्रेरणा के गीत का सुमधुर संगान किया। जोरावरपुरा के सुरेंद्र बुच्चा ने ११ की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने तिरेषठ शलाका पुरुषों के बारे में विस्तार से समझाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगल उद्गार

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगलकामना

● **साध्वी मंजुयशा** ●

समादरणिया 'साध्वीप्रमुखा' पद पर सुशोभित साध्वी विश्रुतविभा जी।

तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसघ है, अनुशासित, मर्यादित एवं संगठित धर्मसंघ है। एक आचार्य की कुशल अनुशासना में पूरा धर्मसंघ निरंतर आध्यात्मिक गति-प्रगति कर रहा है। चतुर्थ आचार्य श्रीमद्जयाचार्य ने संघ में साध्वी समाज की अभिवृद्धि को देखकर उनकी व्यवस्था कुशलता से संचालित हो इसके लिए एक सुयोग्य साध्वी को साध्वीप्रमुखा पद पर प्रतिष्ठित किया। तेरापंथ का साध्वी समाज अत्यंत सौभाग्यशाली है जिन्हें आठ-आठ साध्वीप्रमुखाओं ने अपने प्रखर व्यक्तित्व, कुशल कर्तृत्व एवं सफल नेतृत्व से पूरे साध्वी समाज को गौरवान्वित किया है व व्यवस्था कौशल एवं अपनी सुंदर कार्यशैली से हर गणनायक को पूर्ण निश्चिंत बनाया है।

साध्वीप्रमुखा पद पर परमप्रतापी पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को नौवीं 'साध्वीप्रमुखा' पद पर प्रतिष्ठित किया जिससे पूरा साध्वी समाज आह्लादित है व बड़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

हे सतिशेखरे!

आपकी अप्रमत्तता, स्वाध्यायशीलता, आचार की पवित्रता, चारित्र की उज्ज्वलता, ज्ञान की गहनता, श्रमशीलता, गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण भाव, विनययुक्त व्यवहार अटूट आस्था, मधुरभाषिता, अध्यात्मनिष्ठा आदि-आदि सद्गुणों ने पूरे धर्मसंघ पर एक अनोखी छाप छोड़ी है। आपका तेजस्वी व्यक्तित्व, वर्चस्वी कर्तृत्व एवं कुशल नेतृत्व पूरे साध्वी समाज को नई-नई दिशाएँ प्रदान करेगा।

हे साध्वी समाज की शिरोमणी।

परमपूज्य गुरुदेव श्री महाश्रमण जी ने अनंत-अनंत कृपा बरसाते हुए आप जैसी तपी-तपाई, बनी बनाई, अनुभवी साध्वी को 'प्रमुखा पद' प्रदान कर पूरे धर्मसंघ को धन्य-धन्य कर दिया। गरिमामय 'प्रमुखापद' पर सुशोभित साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के प्रति अनंत-अनंत मंगलकामना। आपका स्वास्थ्य सदैव निरामय रहे, दीर्घकाल तक आपकी शासना मिले। आपके कुशल नेतृत्व में धर्मसंघ की हर साध्वी शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पूर्ण स्वस्थ, आत्मस्थ एवं समाधिस्थ रहती हुई आपकी साधना को उज्ज्वल एवं पवित्र बनाए। अनंत-अनंत मंगलकामना व पवित्र भावना के साथ आपको 'प्रमुखा पद' प्राप्ति कर ढेर सारी अंतस्थल से बहुत-बहुत बधाईयाँ समर्पित।

प्रकृति की पाठशाला में शक्ति का सम्यक् नियोजन करें

● **समणी निर्मलप्रज्ञा** ●

तेरापंथ धर्मसंघ की नवम साध्वीप्रमुखाश्री के रूप में साध्वी विश्रुतविभाजी का मनोनयन परमपूज्य गुरुदेव श्री महाश्रमण जी ने किया। गुरु का पथदर्शन पग-पग मंगलकारी होता है। भावनात्मक नवनिर्माण का लक्ष्य गुरुदेव के महान चिंतन का परिणाम था। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री की अमूल्य सेवाओं के प्रति संपूर्ण साध्वी समाज ऋणी रहेगा। साध्वी समाज की भाव-संवेदनाओं को आचार्य प्रवर तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम होता है–साध्वीप्रमुखा का मनोनयन महापराकर्मी, पुण्यात्मा आचार्यश्री महाश्रमण जी की दिव्यदृष्टि ने नवीन साध्वीप्रमुखा देकर संघ में नयी शक्ति का संचार किया।

तप और तितिक्षा से भावित साध्वीप्रमुखाश्री का जीवन एक आदर्शरूप है। १९८४ में समण दीक्षा में दीक्षित होने के बाद आचार्यश्री तुलसी ने मुझे आपके पास ही सौंपा यह मेरा भाग्योदय था। प्रारंभ से ही आपने मेरे जीवन का निर्माण किया, विवेक और वैराग्य के संस्कारों से मुझे साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ाया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की सेवा का साक्षात् अवसर आपके साथ प्राप्त हुआ।

तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन का दृश्य प्रथम बार देखने के हम साक्षी बने, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पंचामृत से मनभावन दृश्य प्रस्तुत किया।

गुरुदेव की दिव्य वाणी सुनकर आनंद से सारा संघ पुलकित हो उठा। आचार्य का अनुग्रह आपकी तप-त्याग की शक्ति एवं चित्त शुद्धि को वर्धमान बना रहा है। गुरु द्वारा प्रदत्त प्रोटीन एवं विटामिन आपको सर्वशक्तिमान बनाएगा।

नए-नए तौर-तरीके के साथ आप हम सभी को आध्यात्मिक विद्या में निष्णात बनाएँ यही मंगलभावना व्यक्त करती हूँ। साध्वी-समणी समाज की मनोभूमि के अनुरूप उन्हें प्रकृति की पाठशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण की श्री उपलब्धि हो, यही अपेक्षा की जा रही है। आपका कार्यक्रम मंगलमय बने।

हर पल मंगलमय हो----

● **समणी ऋजुप्रज्ञा** ●

जिस तरह बीज के पल्लवन में धूप, हवा, खाद पानी सभी का योगदान होता है, उसी तरह व्यक्ति के निर्माण में अनेक हाथों का योगदान होता है। मेरे जीवन निर्माण में भी अनेक हाथों का योगदान रहा है, उनमें एक महत्त्वपूर्ण हाथ है–साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी का।

आपने गुरुत्रय की अनुत्तर सन्निधि में अनेक नए इतिहास रचे हैं और साधना के नित नए आयाम उद्घाटित किए हैं। आपने समण श्रेणी और साध्वी श्रेणी की सार-संभाल कर अनेकों को समाधिस्थ करने का सार्थक प्रयास किया है।

आपकी संघ निष्ठा, गुरु निष्ठा, तपोनिष्ठा, श्रमनिष्ठा, आचार निष्ठा और अप्रत्त जीवनशैली हम सबके लिए प्रेरणा और आदर्श है।

मैं यही मंगलकामना करती हूँ कि आपका वरदहस्त हम पर सदा बना रहे। आचार्य महाश्रमण जी की छत्रछाया में आपका हर दिन, हर पल मंगलमय हो। आप स्वस्थ और आत्मस्थ रहते हुए हम सबकी चिरकाल तक सारणा-वारणा करवाते रहें और श्रमणी गण के विकास का नव इतिहास रचाते रहें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 अगस्त, 2022

✦ *मौत एक वास्तविक अतिथि है। वह बिना तिथि, दिनांक दिए ही आती है। इस अतिथि के स्वागत की तैयारी सदा ही रखनी चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

वार्षिक अधिवेशन एवं वर्धापना समारोह

भायंदर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, मुंबई द्वारा आयोजित ४१वाँ वार्षिक अधिवेशन व साधारण सभा वर्धापना लक्षित मंजिल की ओर का आयोजन शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, भायंदर में किया गया।

प्रथम सत्र ऊर्जा सत्र का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया। भायंदर महिला मंडल की बहनों द्वारा सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी गई।

मुंबई महिला मंडल की अध्यक्षा रचना हिरण ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत करते हुए सभी के निरंतर सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। वर्ष भर में आर्थिक सहयोग प्रदान करने हेतु सभी प्रायोजकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

साध्वीवृंद द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। मीरा रोड, भायंदर, वसई, नालासोपारा व विरार की बहनों ने विषय पर प्रस्तुति दी। शुभकामनाओं के स्वर में अभातेयुप के सहमंत्री भूपेश कोठारी, मुंबई सभा के मंत्री दीपक डागलिया, भायंदर सभा से भगवती लाल, भायंदर तेयुप अध्यक्ष राकेश वागरेचा ने महिला शक्ति को आध्यात्मिक शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने एक परिकल्पना की उसका सुंदर रूप यहाँ देख रहे हैं। शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' ने कहा कि महिला शक्ति तो बहुत बड़ी शक्ति है। आगम का कार्य अपने आपमें बहुत बड़ा कार्य है।

अधिवेशन के प्रथम सत्र का संचालन उपाध्यक्ष विमला कोठारी ने तथा आभार ई-मीडिया प्रभारी सुचिता कोठारी ने किया। द्वितीय सत्र विवर्धना सत्र में विवर्धना का निष्कर्ष में पूर्वाध्यक्ष सुमन बच्छावत ने कहा कि समय व ऊर्जा का संगम ही टाइम है स्वयं का अवलोकन करें।

विवर्धना का आह्वान परंपराओं का सम्मान में निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने पारिवारिक, सामाजिक व संघीय परंपराओं के बारे में बताते हुए कहा कि इनके साथ ही हमें संघीय परंपराओं को भी निभाना है।

अभातेममं निवर्तमान महामंत्री तरुणा बोहरा ने विवर्धन का सम्मान संस्था का उत्थान के अंतर्गत केसरिया परिधान की महत्ता बताते हुए कहा कि जब हम इसे पहनते हैं तो मर्यादा, अनुशासन व संस्था के प्रति सेवा की जिम्मेदारी ओढ़ी है, हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना है। अभातेममं महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया ने कहा कि जैन जीवनशैली के नव सूत्र हमारे व्यवहार में झलकें।

पूर्वाध्यक्ष भारती सेठिया द्वारा विवर्धना का आधार हमारा संविधान का वाचन किया गया।

द्वितीय सत्र का संचालन अनिता सिंयाल व आभार वंदना चपलोत ने किया। तृतीय सत्र विवर्धना विकास का दर्पण के अंतर्गत कोषाध्यक्ष सुनिता सुतरिया ने पूरे वर्ष के आय-व्यय का ब्यौरा पेश किया।

रूपांतरण शिल्पशाला कार्यशाला

बालोतरा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, बालोतरा द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित रूपांतरण थ्रू जैनिज्म, शिल्पशाला विषय-संयम - एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध, कार्यशाला का आयोजन किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंडल की बहनों के द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने जीवन में संयम का कितना महत्त्व है इस बारे में विस्तार से बताया। संयम के द्वारा ही हम अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं और अपने जीवन में हर चीज का संयम करना चाहिए। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा कि संयम जीवन के अंदर आए, सांसारिक कार्यक रते समय प्रशिक्षण संयम के भाव आने चाहिए ताकि हम पाप कर्म से बच सकें।

कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

तेरापंथ का जन्मदिवस है - तेरापंथ स्थापना दिवस

विशाखापट्टनम्।

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ स्थापना दिवस यानी हमारे धर्मसंघ का जन्मदिवस है। आज से २६३ वर्ष पूर्व आचार्यश्री भिक्षु ने तेरापंथ की स्थापना की थी। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की नींव रखी। एक विचार, एक आचार और एक आचार्य इस त्रिवेणी के आधार पर तेरापंथ ने गति-प्रगति की है।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ में अनुशासन सर्वोपरि है। अनुशासनहीनता अक्षम्य अपराध है। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की बहन ने गीत का संगान किया।

✦ *गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति आंशिक रूप में संयम को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत का अर्थ है–छोटे-छोटे संकल्प। इसे स्वीकार करके भी मोक्ष की ओर कुछ अंशों में आगे बढ़ा जा सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु का २९७वाँ जन्म दिवस व २६५वाँ बोधि दिवस

शाहदरा, दिल्ली।

आचार्यश्री भिक्षु के २९७वें जन्म दिवस व २६५वें बोधि दिवस एवं चातुर्मासिक बड़ी चतुर्दशी का कार्यक्रम शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि वर्ष में ३ चातुर्मासिक चतुर्दशी आती हैं, इन तीनों में एक चतुर्दशी का सर्वाधिक महत्त्व है। साधु-साध्वियों के नव कल्पी व पंच कल्पी विहार होता है। उनमें चतुर्मास एक कल्प व आठ महीनों के एक कल्प साधुओं के लिए होता है। पाँच कल्प साध्वियों के लिए आगम में निर्धारित है।

इस विधान के अनुसार सभी जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास स्थल में पधार गए हैं। साधु-साध्वियाँ स्वयं की आत्म साधना में अनवरत लीन रहते हुए जनता को भी महावीर वाणी का रसास्वादन कराते हैं। शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु के शरीर में कुछेक जन्मजात विलक्षणताएँ थीं–जैसे पैर में उर्ध्व रेखाएँ, हाथ में मत्स्य-रेखा, नाभि पर स्वस्तिक रेखा, ललाट पर आढ़ी तीन रेखाएँ यह सब चिह्न प्रभावशाली व्यक्तियों के शरीर में होते हैं।

मर्यादा पत्र का वाचन हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत द्वारा करवाया गया।

दीक्षार्थी मुमुक्षु दीक्षा का मंगलभावना समारोह

किशनगंज (बिहार)।

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में किशनगंज तेरापंथ भवन में दीक्षार्थी मुमुक्षु दीक्षा का मंगलभावना समारोह मनाया गया। समारोह का शुभारंभ साध्वीश्री जी के भिक्षु अष्टकम् से हुआ। मंगलभावना कार्यक्रम में नेपाल, बिहार, बंगाल से भाई-बहन उपस्थित थे। व्रतों का कवच धारण करने का नाम है–दीक्षा। आत्महित साधने की दिशा में प्रस्थान करने का नाम है–दीक्षा। भोगों को ठुकराकर यावज्जीवन त्यागमय जीवन जीने का नाम है–दीक्षा।

साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्री जी ने मुमुक्षु दीक्षा के भावी जीवन के प्रति मंगलकामना की। मुमुक्षु दीक्षा ने अपने मन की बात बताई कि किस प्रकार उसे वैराग्य उत्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय सभा के अध्यक्ष विमल दफ्तरी, महासभा तथा स्थानीय सभा के संरक्षक राजकरण दफ्तरी, नेपाल, बिहार, झारखंड के अध्यक्ष भेरूदान भुरा, उपाध्यक्ष चैनरूप दुगड़, मंत्री वीरेंद्र संचेती, स्थानीय महिला मंडल अध्यक्षा संतोष दुगड़, उपासिका शायर कोठारी, अररिया, अररिया आरएस, गुलाबबाग, टाटानगर, खुश्कीबाग, इस्लामपुर, भागलपुर सभा के अध्यक्ष, इस्लामपुर में महिला मंडल अध्यक्षा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष, महासभा प्रभारी नवरत्न दुगड़, कन्हैयालाल बोथरा, सुजानमल सेठिया, सभी ने दीक्षार्थी बहन दीक्षा को मंगलभावनाएँ संप्रेषित की। मंच संचालन सभा के मंत्री अजय बैद ने किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

मंडी गोविंदगढ़।

साध्वी प्रसन्नयशा जी का कालू से विहार कर मंडी गोविंदगढ़ में मंगल प्रवेश किया। कार्यक्रम में सबसे पहले महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात उमा सिंगला ने स्वागत गीत के द्वारा प्रस्तुति दी। पंजाब प्रांतीय सभा के चेयरमैन सुरेंद्र मित्तल ने स्वागत करते हुए कहा कि कि महाराजश्री का चातुर्मास मंडी गोविंदगढ़ और आसपास के क्षेत्रों के लिए मंगलकारी है। पंजाब प्रांतीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल, सुनाम ने चातुर्मास में विभिन्न संघीय कार्यक्रम मनाए, ऐसी प्रेरणा दी और पूरे श्रावक समाज को चातुर्मास का पूरा लाभ लेने की प्रेरणा दी।

साध्वी प्रसन्नयशा जी ने कहा कि अब हमारा गोविंदगढ़ में चातुर्मास क्षेत्र में प्रवेश हो गया है। यह सब गुरुदेव की कृपा से ही संभव हुआ है। आशा है कि सब चातुर्मास से अच्छा लाभ लेंगे।

इस अवसर पर नाभा, अमलोह, खन्ना, सुनाम और आसपास के क्षेत्रों के श्रावक कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी ने स्वरूप नगर स्थित गणेशमल जम्मड़ के निवास से एक लंबे जुलूस के साथ हेरिटेज होम में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश किया। स्वागत कार्यक्रम में पहले चरण में हेरिटेज होम की डायरेक्टर डॉ० अनुराधा वार्ष्णेय को समाज की ओर से धन्यवाद दिया गया। सभा मंत्री संदीप जम्मड़, मंजुला रामपुरिया और महिला मंडल की बहनों ने गीत और भाषण द्वारा साध्वीवृंद का स्वागत किया।

सभी वक्ताओं ने गुरुदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की और कहा कि गुरुदेव ने हम सब पर कृपा बरसाई और कानपुर को चातुर्मास प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया।

दिवेर

मुनि संजय कुमार जी का २२ वर्षों के बाद पुनः अपने जन्मभूमि दिवेर में चातुर्मास के लिए प्रवेश हुआ। मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि आदत सुधरे तो सच्चा स्वागत होता है, उसके बिना स्वागत अधूरा है, जब तक त्याग विराग बढ़ता रहेगा तब तक धर्मसंघ फलता और फूलता रहेगा।

मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि मेरी जन्मभूमि और दीक्षा भूमि में चातुर्मास हो रहा है यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है, मैं चाहता हूँ कि सभी का सहयोग मिले और धर्मसंघ के प्रभावना के कार्यक्रम होते रहें।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि आज से एक वर्ष पूर्व आज के दिन मैंने गुरुदेव से बिम्बबहेड़ा में मंगल आशीर्वाद और संदेश लेकर मेवाड़ के लिए विहार किया था। इस अवसर पर अणुविभा राजसमंद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल ने कहा कि दिवेर के अंदर अणुव्रत के अच्छे कार्यक्रम हुए हैं। आगे भी कार्यक्रम होते रहें, यह मंगलकामना है।

मुख्य अतिथि सरपंच भंवर सिंह ने कहा कि तेरापंथ समाज अणुव्रत में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। मुनिश्री के प्रति मंगलकामना करता हूँ कि उनका यह चातुर्मास सफल हो।

तेरापंथ कन्या मंडल, शोभालाल नरेंद्र, धीरज, मधु, नीलम, श्रीमाल मुदित जैन, अशोक कटारिया, सुरेश सींयाल, स्नेहलता लोढ़ा आदि ने गीतों द्वारा स्वागत किया। अणुव्रत समिति दिवेर के अध्यक्ष गणेश राम ने विस्तार से समिति द्वारा किए गए कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

हांसी

साध्वी संयमप्रभाजी का तेरापंथ भवन जीन्द में चातुर्मासिक प्रवेश का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी संयमप्रभाजी ने नमस्कार महामंत्र के माध्यम से किया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहन स्नेहा जैन, बिंदु गोयल, वीना जिंदल ने स्वागत गीत से किया।

तेयुप, जीन्द के सदस्यों ने भी सामुहिक गीतिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर टीपीएफ के अध्यक्ष डॉ० अनिल जैन, महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल, सभा अध्यक्ष खजांची लाल जैन आदि ने साध्वी संयमप्रभाजी तथा उनकी सहवर्तिनी साध्वियों का जीन्द आने पर स्वागत किया।

साध्वी संयमप्रभाजी ने कहा कि चातुर्मास में हमें तप, जप, स्वाध्याय द्वारा कर्मों की निर्जरा करनी है। साध्वी शशिकला जी, साध्वी उज्ज्वलयशाजी, साध्वी चिन्मयशाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी सोमलता जी का चातुर्मासिक प्रवेश दक्षिण मुंबई के कालबादेवी स्थित महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में हुआ। तेरापंथ समाज, मुंबई के सभी उपनगरों से चिंचपोकली जैन स्थानक से शुरू हुई इस रैली में लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के नमस्कार मंत्र से हुई। खुशी धींग ने मंगलाचरण किया। महिला मंडल ने गीतिका द्वारा स्वागत किया।

उसके पश्चात तेरापंथ सभा अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, फाउंडेशन से कुंदनमल धाकड़, तेयुप, उपाध्यक्ष राहुल मेहता, महिला मंडल संयोजिका रेखा धाकड़ सहित अनेक जन उपस्थित थे। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने किया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी एवं आचार्य भिक्षु जन्म दिवस-बोधि दिवस

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० कुंदनरेखाजी के सान्निध्य में चातुर्मासिक चतुर्दशी एवं आचार्य भिक्षु जन्म दिवस के उपलक्ष्य में संयुक्त कार्यक्रम मनाया गया। हाजरी के वाचन के पश्चात साध्वी कुंदनरेखाजी ने कहा कि चातुर्मासिक चतुर्दशी का तिथि के रूप में तो महत्त्व है ही, उसके अतिरिक्त चार मास अध्यात्म चेतना से युक्त बिताने का भी यह दिन आह्वान करता है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म एवं बोधि किसी व्यक्ति की नहीं बल्कि अध्यात्म की शक्ति युक्त विचारों का है। आचार्य भिक्षु के दृढ़-संकल्प चेतना ने संयम का मार्ग चुना। संयम से समता के पथ पर आगे बढ़ने हेतु जैन आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया।

सत्य का बल उनका साथी था, जिसने हर पल साथ निभाया और दुनिया को आचार्य भिक्षु के चरणों की दीवानी बना दिया। ऐसे क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु को शत-शत नमन्, जिन्होंने तेरापंथ संघ में अध्यात्म को शिखर पर आरोहण करने का मार्ग प्रशस्त किया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु अलबेले थे, बुद्धि और विवेक के भंडार थे। आगमवाणी के मर्मज्ञ थे। जिनशासन के प्रति उनका समर्पण, श्रद्धा बेजोड़ थी।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने कहा कि आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ संघ को विश्व के सम्मुख देकर जन उपकार किया है। जिन्होंने मर्यादा और अनुशासन का आधार दिया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, रोहिणी के महामंत्री राजेंद्र सिंघी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन-दर्शन, संयम, समता, सहनशीलता एवं श्रम की पराकाष्ठा है, जिन्हें पढ़कर आत्मसात करें अपेक्षित है। राजू देवी राखेचा ने गीत का संगान किया। युवती मंडल ने सामुहिक गीत के द्वारा स्वामी जी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए। भिक्षु अष्टकम् द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी कल्याणयशा जी ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। तेयुप, दिल्ली द्वारा धम्म जागरण का वृहदतम आगाज किया गया, जिसमें दिल्ली के गायकों ने भाग लिया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

भीलवाड़ा निवासी, सूरत प्रवासी ज्योति-संपतराज झाबक के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ एवं सुशील पुगलिया ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप सहमंत्री मनीष परमार ने झाबक परिवार का आभार ज्ञापन किया।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

शशि बांठिया, चुरू निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष बरमेचा, संस्कारक सौरभ आंचलिया ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगलमंत्रोच्चार संपादित करवाया।

तेयुप की तरफ से बांठिया परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से संदेश का वाचन संस्कारक सौरभ आंचलिया ने किया।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

स्व० धर्मचंद रामपुरिया के सुपुत्र मोहनलाल रामपुरिया ने अपने नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

गंगाशहर।

पियूष लुणिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक पवन छाजेड़, रतनलाल छल्लाणी, भरत गोलछा और देवेंद्र कुमार डागा ने विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर लुणिया परिवार के सदस्य और पूर्व तेयुप अध्यक्ष जतन संचेती, किशन बैद, समाज के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

भुज।

स्थानकवासी संप्रदाय के दोशी केतनभाई, कीर्तिभाई के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक नरेंद्रभाई मेहता, प्रभुभाई मेहता, भरत बाबरिया ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप के अध्यक्ष आशीष बाबरिया, मंत्री महेश गांधी की उपस्थिति रही। दोशी परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। तेयुप अध्यक्ष ने आभार ज्ञापन किया।

उच्चारण शुद्धि कार्यशाला

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा जैन संस्कार विधि उच्चारण शुद्धि कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा भवन के उपासना कक्ष में आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से की गई। कार्यक्रम में जैन संस्कारक व प्रवक्ता उपासक मालचंद भंसाली द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला में नमस्कार महामंत्र एवं मंगलभावना के उच्चारण शुद्धि का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में संस्कारक व उपासक संजय पारख, संस्कारक बीरेंद्र बोहरा, संस्कारक हितेंद्र बैद ने भी उच्चारण शुद्ध का लाभ लिया।

परिषद के सहमंत्री अमित बेगवानी, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया, संगठन मंत्री रोहित बैद की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री रोहित बैद ने किया।

✦ *व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न हो, उसमें तल्लीन होना व एकाग्र होना भावक्रिया है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगल उद्गार

अर्हम्

● **साध्वी प्रतिभाश्री** ●

मनोनयन साध्वीप्रमुखा का बन संघ खुशहाल।
गण प्रांगण में आज देखो सुरभित चले बयार।
पौर-पौर में पुलकन, स्वर्णिम भोर नूतन।।

युग प्रधान महाश्रमण जी नव इतिहास रचाया।
साध्वीप्रमुखा नवमी पाकर जन-जन हरसाया।
दशों दिशाएँ मोद मनाएँ, स्वागत में नव थाल सजाएँ।
गाएँ मंगलाचार।।

साधना विशिष्ट तेरी, प्रेरणामय जीवन।
गुण सुमनों से महका तेरापंथ गुलशन।
महाप्रज्ञ की अनुपम कृति का अभिनंदन शत बार।।
समणी से श्रमणी महा हीरकमणि मन भाए
सावी शिरोमणी पा तुम सी भाग्य सराए।
अर्चा की ले नई ऋचाएँ, संघमणी को आज बधाएँ।
खुशियाँ बे अंदाज।।

भैक्षवगण की, महिमा निराली।
महाश्रमण गुरुवर की साध्वीगण आभारी।
मंगलमय हो सदा संघ में जय विजय हो गण उपवन में।
महाश्रमण रिछपाल।।

लय : स्वर्ग से सुंदर---

अर्हम्

● **समणी कुसुमप्रज्ञा** ●

वर्धापना के पावन अवसर पर मैं अपनी सहपाठिनी की अभिवंदना करूँ या सहदीक्षित की, प्रथम बार विदेश यात्रा करने वाले व्यक्तित्व के कर्तृत्व को उजागर करूँ या समण श्रेणी की प्रथम नियोजिका जी की अभ्यर्थना करूँ साध्वीप्रमुखा साध्वी विश्रुतविभाजी के अनेक रूप मेरे सामने हैं। लाडनूं के मोदी परिवार में जन्मी १३ भाई-बहनों एवं माता की दुलारी बहन सविता ने उत्कृष्ट वैराग्य से संस्था में प्रवेश किया। अप्रमत्त और स्वाध्यायप्रिय मुमुक्षु के रूप में उन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई। छह साल मुमुक्षु जीवन में गहन अध्ययन करने पर मुमुक्षु जीवन में ही पूज्यवरों ने अनेक मुमुक्षु बहनों के साथ उनको भी आगमकोश के कार्य में नियुक्त कर दिया।

प्रथम बार विलक्षण दीक्षा में दीक्षित होने वाली छह बहनों में आपने अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखाया। १२ साल समण साधना के काल में आपने नेतृत्व की अनेक सीढ़ियों पर सफल आरोहण किया। पूज्यवरों की कृपा से श्रेणी आरोहण करके समणी स्मितप्रज्ञा जी साध्वी विश्रुतविभा बन गई। दीक्षित होने के कुछ समय पश्चात ही आचार्य महाप्रज्ञ जी के पास आगम कार्य करने का आपको परम सौभाग्य मिला। आचार्य महाप्रज्ञ जी की पारखी नजरों ने आपकी क्षमता को पहचानकर चाड़वास मर्यादा महोत्सव पर साध्वियों की अंतरंग व्यवस्था से जोड़ दिया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने मुख्य नियोजिका पद से अलंकृत करके आपको साध्वियों में दूसरे स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

२०२२ के सरदारशहर प्रवास में आचार्यश्री ने आपको प्रमुखा के पद पर अभिषिक्त कर दिया। गुरु की अनहद कृपा प्राप्त करके उन्होंने अपनी क्षमता का अनेक क्षेत्रों में उपयोग किया। आगम कार्य, महाप्रज्ञ वाङ्मय का संपादन तथा आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद आदि। इन सबके साथ आपका खाद्य संयम, तप और जप की चेतना भी बहुत प्रशस्त और प्रशंसनीय है। ऐसी बहुमुखी प्रतिमा की धनी साध्वीप्रमुखा जी को मेरा भावभरा कोटिशः नमन।

अर्हम्

● **समणी संघप्रज्ञा** ●

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता ने आपको 'प्रमुखा पद' पर प्रतिष्ठित कर समण श्रेणी के गौरव को शतगुणित किया है। आप धर्मसंघ की नौवीं साध्वीप्रमुखा हैं, अंकशास्त्र में ९ का अंक अखंड माना जाता है जो आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अखंड आराधना का सूचक है, 'रहो भीतर जीओ बाहर' सूत्र आपके जीवन व्यवहार में स्पष्ट परिलक्षित होता है। 'शुभ भाव में रहना' आपका उपास्य सूत्र है तो 'समभाव' में रहना आपका प्रेरणा सूत्र है, समयज्ञता, गंभीरता, अप्रमत्तता, पापभीरूता आदि नैसर्गिक गुणों ने आपको हमेशा ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा ने आपको सदैव संघ के सम्मानित पदों पर काम करने का अवसर दिया है, मेरे जीवन विकास में आपकी अहम् भूमिका रही है, जिसके लिए 'कृतज्ञता' शब्द बौना सा लगता है, मुझे मौन या मुखर आपसे सदैव प्रेरणा मिलती रही है, यह मेरा सौभाग्य है, आप इस महनीय पद पर दीर्घकाल तक सुशोभित होते हुए हमारा मार्गदर्शन करते रहें, यही अंतर्दिल की अभीप्सा है।

अर्हम्

● **समणी डॉ० निर्वाणप्रज्ञा** ●

जन-जन की निगाहों को एक नया नजारा मिला है,
जीवन की राहों को एक नया उजारा मिला है,
ज्योतिपुंज गुरुदेव के द्वारा साध्वीप्रमुखा के रूप में
गण की चाहों को एक दिव्य सितारा मिला है।

अभिवंदना करते हैं हम नव साध्वीप्रमुखाश्री जी का भावों के सुमनों से अभिवंदना करते हैं हम नव साध्वीप्रमुखाश्री जी का श्रद्धा के मोती से अभिवंदना करते हैं हम नव साध्वीप्रमुखाश्री जी का समर्पण के कुंकुम से अभिवंदना करते हैं हम नव साध्वीप्रमुखाश्री जी का अनुशासन के केसर से

महापुरुषों का जीवन विलक्षणताओं का आलय होता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में भी हमें अनेकानेक विलक्षणताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। आपका चयन १५-५-२०२२ को हुआ, अंक गणित के अनुसार इसका जोड़ ८ होता है। आपको आठ साध्वीप्रमुखाओं की शक्ति व आशीर्वाद प्राप्त है। आठ का ठाठ आपके जीवन में परिलक्षित होते हैं।

– आप मुमुक्षु से 'नए युग का नया संन्यास' विलक्षण दीक्षा की प्रथम कड़ी बन समण श्रेणी में प्रवेश किया।

– समण श्रेणी की प्रथम समणी नियोजिका बने।

– मुमुक्षु बहनों की निर्देशिका बने।

– मुख्य नियोजिका जी के पद पर सुशोभित हुए।

– समण श्रेणी की व्यवस्था का दायित्व संभाला।

– आप पहली साध्वीप्रमुखा हैं जिन्होंने ४२ वर्षों तक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के सान्निध्य में रहकर व्यवस्था कौशल के गुर सीखे।

– आप पहली साध्वीप्रमुखाजी हैं जो ६४ वर्ष की उम्र में साध्वीप्रमुखा बने हैं।

– समण श्रेणी से बनने वाली पहली साध्वीप्रमुखा हैं।

आपका यह आध्यात्मिक सफरनामा पुरुषार्थ की गाथा है। हम मंगलकामना, मंगलभावना करते हैं–

शुभभाव से शुभ विचार से, शुरू हुआ यह अभियान।
श्रद्धा समर्पण समन्वय से, सफल होगा हर काम।।

अर्हम्

● **समणी संचितप्रज्ञा** ●

तेरापंथ धर्मसंघ का योगक्षेम करने में आचार्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। साथ ही साथ साध्वी समाज के विकास एवं व्यवस्थाओं के दायित्व की डोर को ऊँची उड़ान देने में साध्वी प्रमुखाओं की प्रशस्त भूमिका है।

नवम् साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ के हाथों गढ़ी हुई विशेषताओं की विरल विभूति है। नेतृत्व की क्षमताओं से भरपूर, श्रमनिष्ठा की स्याही से रेखांकित, शौर्य-वीर्य की उजली नजर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी! जिनके जीवन में भाग्य एवं पुरुषार्थ का योग है। जिन्होंने संयम एवं तप में पुरुषार्थ कर अपनी तकदीर को सजाया है, संवारा है एवं निखारा है।

अद्भुत है जिनकी संयम-चेतना,
अनुपम है जिनकी तप-चेतना,
अद्वितीय है जिनकी चिंतनशैली,
अनुकरणीय है जिनका आहार-संयम।

कई वर्षों से आप समय-समय पर आहार संयम, ऊनोदरी, रस-परित्याग, तप की साधना करती हुई सात्त्विक, अनासक्त एवं साधनामय जीवन जीती है। उपवास, बेला, तेला चलते-फिरते करना आपकी तपः रुचि का प्रतीक है। आपका कहना है जब तक मेरे कार्य में बाधा नहीं आएगी तब तक तप संकल्प का दीप जलता रहेगा। अनुत्तर संयमी औरअनुशासन प्रिय साध्वीप्रमुखा को पाकर तेरापंथ धर्मसंघ गौरव की अनुभूति कर रहा है। मौनी, ध्यानी, ज्ञानी, गढ़ी गढ़ाई प्रमुखाश्री, आचार्यश्री महाश्रमण के प्रताप से हमें मिली है। आप धर्मसंघ को अपनी सेवाएँ देती रहें। हम सबकी सार-संभाल करती हुई नए इतिहास के पृष्ठ लिखें। पूरा साध्वी समाज एवं समणी वर्ग, आपको प्रमुखा पद पर सुशोभित देखकर खुशियाँ मना रहा है। आपके भावी जीवन के प्रति शुभकामनाएँ।

मंगलभाव सजाएँ मिलजुल मंगल बेला आई है,
मनमोहक साध्वीप्रमुखा पा, देते आज बधाई है,
समण श्रेणी की करो सारणा, संस्कारों का बीजारोपण,
विजय हार पहनाएँ तुमको, स्वागत घड़ियाँ मनभाई है।।

अर्हम्

● **समणी मुकुल प्रज्ञा** ●

नंदी सूत्र में तीन प्रकार की परिषद बताई गई है। उनमें पहली है जाणिया परिषद। यह परिषद मिथ्या तर्क-वितर्क को दूर करने वाली हंस की भाँति उत्तम होती है। जो क्षीर नीर विवेक से उत्तम क्षीर को ग्रहण कर लेती है और नीर को अलग कर लेती है। आपश्री की उन्नत यात्रा का एकमात्र कारण है। हंस की भाँति सम्यक् दृष्टिकोण। आप सदैव अपने गुरु की प्रतिछाया बनकर रही। उनसे जो भी आपने पाया उसे क्षीर की भाँति ग्रहण कर लिया। कहीं एक लाइन पढ़ी थी कि जो सदैव महापुरुषों के समीप बैठता है, उसका जीवन भी उच्च बन जाता है, आज आप जिस पद को सुशोभित कर रहे हों, यह उसी का ही प्रतिफल है। आपकी स्थिर-प्रज्ञता, मध्यस्थता, तटस्थता, गंभीरता और मित्तभाषिता बेजोड़ है। जब भी आप छोटे समणीजी को समय दिलाती तो एक ही बात कहती हमारा चिंतन पोजिटिव हो हम सदैव शुभ भावों में रहें। हमारी सहजशक्ति का विकास हो। कोई हमें कुछ भी कहे हम उसका प्रतिकार करने की अपेक्षा ये सोचें शब्द तो पुद्गल हैं, जिसका स्वभाव है बदलना हम पुद्गलों को न रखकर अपने मूल स्वभाव में रमण करें, यही साधक का लक्षण है। अंत में आपके मंगल भविष्य की मंगलकामना। शुभेच्छा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगल उद्गार

अर्हम्

● **डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा** ●

भिक्षु गण है गौरवशाली, जयाचार्य की देन निराली।
महासती का किया प्रवर्तन, साध्वीगण पाए संरक्षण।
सरदारांजी पहला नंबर, विश्रुतविभाजी नवमें पद पर।
सद्संस्कारी अनुपम क्षमता, विनय समर्पण ममता समता।
ग्रहणशीलता कार्यकुशलता, सहनशील व्यवहारकुशलता।
पापभीरूता हृदय सरलता, निर्झर सम गति है शीतलता।
भोजन संयम निद्रा संयम, वाणी संयम इंद्रिय संयम।
भाग्य और पौरुष का संगम, पावनता मृदुता है अनुपम।
प्रातः उठकर नित स्वाध्यायी, अकथ परिश्रम अलख जगाई।
गुरु आज्ञा से पाट संभाला छाया गण में दिव्य उजाला।
अजब गजब प्रगटी पुण्याई, साध्वी गण सरताज कहाई।
महाप्रज्ञ वाङ्मय संपादन, आज बना जन-जन आकर्षण।
ऊँचा कद है ऊँचा पद है, दर्शन ज्ञान चरण संपद है।
उत्तम है व्यक्तित्व तुम्हारा, उत्तम है कर्तृत्व तुम्हारा।
उत्तम है नेतृत्व तुम्हारा, उत्तम है वक्तृत्व तुम्हारा।
रहो निरामय करूँ कामना, युग-युग जीओ यही भावना।

अर्हम्

● **समणी हिमप्रज्ञा** ●

वर्धापन की मंगल बेला में मंगल दीप जलाएँ।
नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखा को हम सब आज बधाएँ।

हे करुणावतार! करुणानिधे! सकल संघ है आपका आभारी।
युगानुरूप साध्वीप्रमुखा पाकर हर्षित है जनता सारी।
नव प्रमुखा विश्रुतविभाजी में हम कनकप्रभा साध्वीप्रमुखा के दर्शन पाए।
संघ शिखर पर चढ़ते जाओ, भावों का अर्घ्य चढ़ाएँ।
नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखा को हम सब आज बधाएँ।।

समण श्रेणी की प्रथम नियोजिका बनने का सौभाग्य आपने पाया।
साध्वीगण की प्रथम मुख्य नियोजिका बनने का गौरव भी आपने पाया।
लंबे अर्से तक समण श्रेणी का निर्माण करवाया।
समण श्रेणी है गुरुदेव की आभारी, प्रथम समणी स्मितप्रज्ञा को साध्वीप्रमुखा पद पर आसीन करवाया।
तेरापंथ जैन शासन की उत्तरोत्तर महिमा महकाएँ।
नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखा को हम आज बधाएँ।।

तुलसी का वरदहस्त है पाया महाप्रज्ञ का निकट सान्निध्य पाया।
गुरु महाश्रमण ने आपको शिखरों चढ़ाया।
गुरुत्रय की कृपा पाकर जीवन सरसब्ज बनाया।
महाप्रज्ञ ने कहा साहित्य शृंखला को जन-जन तक पहुँचाया।
आपके भाग्य की क्या गुण गरिमा गाएँ,
जन्म से ही आप भाग्य लेकर के आए।
नव निर्वाचित साध्वीप्रमुखा को हम आज बधाएँ।।

स्वाध्याय संघ सेवा में ही अनुरक्ति, जिन शासन में है गहरी भक्ति।
संघ विकास में लगे तव शक्ति। आरोग्ग बोहिलाभं का वरण करो मंगल भाव सजाएँ।
हम सभी की साधना बढ़ती जाए, ऐसा वरदान आप दिलाएँ।
नव निर्वाचित साध्वीप्रमुखा को हम सब आज बधाएँ।।

गुरु दृष्टि इंगित आराधना से नव इतिहास रचाएँ।
शक्ति और साहस से लिखे आप नई ऋचाएँ।
अविराम गति से बढ़ते जाएँ, जैन धर्म का परचम फहराएँ।
नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखा को हम सब आज बधाएँ।।

अर्हम्

● **समणी विनीतप्रज्ञा, समणी जगतप्रज्ञा** ●

वर्धापन मंगल बेला आई है मनभाई।
साध्वीप्रमुखाश्री आज बधाई, देते प्रमुखाश्री आज बधाई।।

पाई है तुमने ज्ञान गहराई, कला नेतृत्व की सबको लुभाई।
लगता है व्यवहार सुहाना, मुद्रा मोहक व्यक्तित्व लुभाना।
विनय, विवेक, विद्या से बगिया सरसाई।। साध्वी---

संयम, संघ गुरु निष्ठा निराली, तप-जप आराधना से आतमा उजाली।
धीर गंभीर साध्वीप्रमुखा हमारी, प्रतिभा विलक्षण देखी तुम्हारी।
निर्मल भावों में रहकर अंतर ज्योत जलाई।। साध्वी---

सहज सरल देखी अलबेली, सुंदर लेखन सुंदर प्रवचनशैली।
पास में तेरे है श्रुत का खजाना, कोमल दिल लगता मनभाना।
पाओ तुम साधना में सागर-सी गहराई।। साध्वी---

दृढ़ संकल्पी हो स्वाध्यायशीला, पुरुषार्थी जीवनशैली सौम्य सुशीला।
रहे अनामय गात तुम्हारा, यही है अंतर भाव हमारा।
गुरुवर की महर नजर से पाई है ऊँचाई।। साध्वी---

तुलसी चरणन में पाया संयम पावन।
महाप्रज्ञ सन्निधि में श्रुत अवगाहन।
महाश्रमण शासना में विजय वरो तुम।
शासन माँ का रूप धरो तुम।।
करना है साध्वी-समणी गण संभाल स्वाई।।
साध्वीप्रमुखाश्री आज बधाई।।

लय : दुनिया बनाने वाले---

अर्हम्

● **समणी मृदुप्रज्ञा** ●

होऽऽ झूमझूम गुण गाऊँ रे तेरापंथ सरताज।
गुरु दर्शन पा हरसाऊँ मैं।।
युगप्रधान गुरुवर महाग्यानी
दीक्षा दिवस पर की फरमानी
सुदी चौदस दिन मंगल गाया
साध्वीप्रमुखा चयन लुभाया।।

शासनमाता को साज दिया था
तुलसी कृति ने तुम पर नाज किया था
महाप्रज्ञ का काम सवाया
महाश्रमण नव इतिहास रचाया।।

स्वाध्याय ध्यान से जीवन संवारा
गुरुभक्ति गुरुइंगित सहारा
मौन समर्पण से जीवन सजाया
मंत्र साधना ने ताज पहनाया।।

चंदेरी धरती का गौरव बढ़ाया
गण महिमा को शिखरों चढ़ाया
साध्वी समाज देता बधाई
जन-जन मन में खुशियाँ है छायी।।

अर्हम्

● **समणी मलयप्रज्ञा, समणी नीतिप्रज्ञा** ●

शक्ति स्रोत तुम शक्तिदायिनी, परम शांति शीतल शुभ चंदन।
वीतराग की प्रतिमूर्ति का, करती हूँ मैं निज अभिनंदन।।

धन्य-धन्य बना चंदेरी प्रांगण, धन्य तेरा उदितोदित शासन।
महक उठी ये गण फुलवारी, पा विश्रुत विभा का अनुशासन।
पंचशताधिक साध्वीप्रमुखा का करते हैं नित अभिवादन।
मयतामयी माँ श्रुतदेवी का, करती हूँ मैं नित अभिनंदन।।

चंदन सौरभ सुरभित बनकर, महक रहे तुम गण गगनांगण।
सरल शासना करण नजर से, करते आस्वासित सबका मन।
निरामय चरणों में रहकर, छूटे भव भय भटकन।
वीतराग की प्रतिमूर्ति का, करती हूँ मैं नित अभिनंदन।।

उपदेश तुम्हारा पावन है, संदेश बड़ा ही मनभावन।
जीवन का हर पहलू कहता, वैभवशाली हो तुम भिक्षु चमन।
शौर्य वीर्य पुण्यवान प्रतिमा को, आज बधाता है कण-कण।
परम प्रकृष्ट समता स्तातस्विनी का, करती हूँ मैं नित अभिनंदन।।

दिल में रहता आगम चिंतन, समय बीतता करते मंथन।
चिंतन मनन क्रियान्विति संयुत, तेरा है शुभ अनुशासन।
रत्नत्रयी आराधक साधक, बरसाती ज्ञान धन सावन।
साहस शौर्य सृजन की रागिनी का, करती हूँ मैं नित अभिनंदन।।

भावों की नभ में उड़ान भर, भक्तिगीत करते अनुगुंजन।
जीवनदात्री संस्कार प्रदात्री को, अर्पित करती भाव सुमन।
अभिनंदन का अवसर पावन, श्रद्धा समर्पित तव चरणन।
निर्मल निश्छल निर्विकार सतिशेखरे को, मलय नीति करती है वंदन।।

अर्हम्

● **समणी सत्यप्रज्ञा** ●

मंगलमय हो हर पल तेरा मंगलमय हो राहें।
मंगलमय है गुरु का साया, आगे बढ़ते जाएँ।
हर चाहत चरण तले।।

गुरु ने चादर बगसायी साध्वीप्रमुखा वरदायी।
दायित्व डोर जो थामी, सक्षम हो सदा सवायी।
गुरु हैं नाविक, खेवनहारे, थामे पतवार चले।।

तुम क्षीर समंदर जैसी, बाहर अंदर इक जैसी।
श्रद्धामय सांस सुनहरी, अनुपम वत्सलता बरसी।
तुलसी युग का नव तीर्थ तुम्हीं, यश महाप्रज्ञ उजले।।

महाश्रमण शासनावासी, दुनिया सारी हरषायी।
साध्वीप्रमुखा नवमासन, गण-बगिया स्मित सरसाई।
हो हंस मनीषा, पारमिता प्रज्ञा के पथ भले।।

हो स्वस्थ निरामय काया, पायी शासन की छाया।
तप जप समदर गहराया, ज्ञानोत्सव ध्वज फहराया।
निज पर निज शासन-अनुशासन, नय विनयी सपन फले।।

लय : आ चल के---

✦ *व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो और व्यवस्था भी अनुकूल हो तो दोनों के योग से 'नैतिकता की सरिता, महक उठे मानवता' की बात उजागर हो सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

तेजोलब्धि : उपलब्धि और प्रयोग

प्रश्न : तेजोलेश्या क्या है? यह शारीरिक शक्ति है अथवा आत्मिक परिणति? क्या इस लेश्या की विशुद्धि से बीमारियों का भी उपशमन होता है?

उत्तर : तेजोलेश्या हमारे सामने दो रूपों में है-उसका एक रूप पौद्गलिक है और दूसरा चैतसिक है। इसका पौद्गलिक रूप तैजस-परमाणुओं से बनता है। वे परमाणु बहुत ही शुभ और सुखद होते हैं। इसका दूसरा रूप भावात्मक है। इसके आधार पर विचार बनते हैं। विचारों का बनना और बिगड़ना बहुल रूप में भावों पर निर्भर करता है। लेश्या का सीधा संबंध भावों से है। भावधारा के माध्यम से विचार प्रभावित होते हैं।

सब तैजस परमाणु एकरूप नहीं होते। उनमें कुछ परमाणु शुद्ध, कुछ शुद्धतर और कुछ शुद्धतम होते हैं। इसी आधार पर भावों में तारतम्य रहता है। वे भी विशुद्ध, विशुद्धतर और विशुद्धतम होते हैं। उज्ज्वल तेजोलेश्या से तेज और ओज की वृद्धि होती है तथा अनेक प्रकार की मानसिक और मनोकायिक बीमारियां मिट जाती हैं। हर बीमारी मिट ही जाती है, इस एकांगी दृष्टिकोण में हमारा विश्वास नहीं है। बीमारियां मिटती हैं, यह सापेक्ष बात है। बाहरी कीटाणुओं और जीवाणुओं के संक्रमण तथा कुपोषण से होने वाली बीमारिया मिटें ही, यह कोई अनिवार्यता नहीं है। किंत भावना और मन से संबंध रखने वाली बीमारियां उससे अवश्य ही प्रभावित होती हैं। सूर्य-रश्मि चिकित्सा-पद्धति (कास्मिक थेरपी) आज की सफल और सम्मत चिकित्सा पद्धति है। यह लेश्या ध्यान का ही व्यावहारिक रूप है।

प्रश्न : वैज्ञानिक मूल्यों के संदर्भ में लेश्या का क्या महत्त्व है? रश्मि चिकित्सा की भांति रंग-चिकित्सा (कलर थेरेपी) का भी आज बोलबाला है। क्या यह भी लेश्या का ही कोई प्रयोग है?

उत्तर : लेश्या अपने आप में बहुत बड़ा विज्ञान है। ध्यान-साधना की दृष्टि से उस समझना बहुत आवश्यक है। रंग चिकित्सा और रश्मि-चिकित्सा की सूक्ष्मता लेश्या ध्यान के माध्यम से अनुभव की जा सकती है। हमारे शरीर में रंगों की कमी के कारण अव्यवस्था होती है। इसी प्रकार प्रकाश की कमी से भी संतुलन बिगड़ता है। रंग और रश्मियों के आधार पर शारीरिक परिवर्तन और भाव परिवर्तन होते हैं, इसलिए इन चिकित्सा पद्धतियो को महत्त्व मिल रहा है। ये दोनों पद्धतियां लेश्या-ध्यान की उपजीवी हैं। जिस प्रकार सूर्य की रश्मियों के रंगों अथवा बोतल आदि के रंगों से शारीरिक परिवर्तन होते हैं, वैसे ही भावना के स्तर पर रंगों के ध्यान से भाव-परिवर्तन की घटना को नकारा नहीं जा सकता। आज तो इस विषय में बहुत वैज्ञानिक कार्यरत हैं। उनके विश्लेषणों और प्रयोगों से नए-नए तथ्य प्रकाश में आ रहे हैं। आने वाले दशक में लेश्या-ध्यान का प्रयोग एक वैज्ञानिक प्रयोग के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा। इस संभावना को निर्णायक रूप मिलने में कोई कठिनाई नहीं होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रश्न : लेश्या हमारे भाव-शोधन का एक अमोघ उपाय है। उससे शारीरिक और मनोकायिक स्वास्थ्य भी उपलब्ध होता है। पर यह सब तभी हो सकता है, जब लेश्या विशुद्ध हो। लेश्या को शुद्ध बनाने की क्या प्रक्रिया है?

उत्तर : लेश्या को विशुद्ध करने का एक महत्त्वपूर्ण उपाय है-ध्यान। इसके साथ भावशोधन के जितने उपक्रम हैं, वे सब लेश्या को शुद्ध करने वाले हैं। उन उपक्रमों में आतापना, तपस्या, स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा और चिंतन का जितना योग है उतना ही वातावरण शुद्धि का भी योग है। अनुकूल परिस्थितियों और चौतसिक निर्मलता का भी अपना मूल्य है। ये सब बातें एक साथ या अलग-अलग रूप में हमारी भावधारा को प्रभावित करती हैं और उससे लेश्या विशुद्ध या उज्ज्वल होती है। ।

प्रश्न : आज के वैज्ञानिक सौर ऊर्जा को संगृहीत कर उसे लोकजीवन के लिए उपयोगी बना रहे हैं। सौर ऊर्जा में प्राप्त होने वाला प्रकाश-तत्त्व और रंग-तत्त्व लेश्या में भी विद्यमान है। क्या ऐसी भी कोई प्रक्रिया है, जिससे लेश्या की ऊर्जा को संग्रहीत कर उसे व्यवहार में उपयोगी बनाया जा सकता है?

उत्तर : तेजोलब्धि और क्या है? संचित ऊर्जा की अभिव्यक्ति ही तो है यह। व्यक्ति के स्तर पर इसका उपयोग भी होता है। तेजोलब्धि जिसके पास होती है, वह उसका उपयोग निर्माण और ध्वंस दोनों कामों में कर सकता है। इसी को प्राचीन भाषा में अनग्रह या वरदान और निग्रह या शाप कहा जाता था। अनुग्रह करने वाली तेजोलेश्या को शीत तेजोलेश्या कहा जाता है और निग्रह करने वाली तेजोलेश्या को उष्ण तेजोलेश्या। एक दृष्टि से देखा जाए तो सुख और दु:ख के संवेदन, राजीपन और नाराजगी, वरदान और शाप ये सब ऊर्जा अथवा विद्युत के ही परिणाम हैं। विद्युत के बिना कुछ भी नहीं होता।

जिस प्रकार विद्युत अपना चुंबकीय क्षेत्र बनाती है, उसी प्रकार तेजोलेश्या भी, चुंबकीय स्थान बनाती है। उसकी विद्युतधारा व्यक्ति के व्यक्तित्व को किसी सहयोग देती है तथा अन्य उपलब्धियों के प्राप्त होने में भी निमित्त बनती हैं।

सामान्यतः हर व्यक्ति थोड़ी-बहुत विद्युत का संचय करता ही है। अधिकार से अधिक सामर्थ्य बढ़ता है और समर्थ व्यक्ति ही अनुग्रह या निग्रह की क्षमता प्राप्त कर सकता है। तेजोलब्धि के प्रमुख रूप से तीन कारण हे-आतापना, सहिष्णुता और जलरहित तपस्या।

आतापना एक प्रकार से सौर ऊर्जा प्राप्ति का ही उपक्रम है। किस आसन और किस स्थिति में बैठने से अधिक सौर ऊर्जा संचित हो सकती है, इस बात को ध्यान में रखकर विशिष्ट साधकों के लिए खड़े-खड़े आतापना लेने का क्रम है। लेटकर आतापना लेने का विधान कम मिलता है। बृहत्कल्प भाष्य में इस संबंध में विस्तार से चर्चा की गई है। -- सहिष्णुता भी ऐसा तत्त्व है, जिससे तैजस का विकास होता है। जिस साधक में सहिष्णुता नहीं होती, वह शारीरिक और मानसिक प्रतिकूलता में अस्थिर हो जाता है, संतुलन खो देता है। वैसे हर व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से होने वाला तैजस-शरीर होता ही है, पर वह शरीर से बाहर नहीं निकलता। तपजनित तैजस ही व्यवहार में उपयोगी बनता है। सहिष्णुता भी एक प्रकार का तप है। दसविध श्रमणधर्मों में इस का स्थान पहला है। तेजोलब्धि साधने के लिए इसको साधना बहुत जरूरी है।

तीसरी बात है-जलरहित तपस्या। जल तैजस का प्रतिपक्षी तत्त्व है। जिस तपस्या में जल का सेवन होता है, वह तैजस को उतना प्रबल नहीं बना सकती। भगवान महावीर से जब तेजोलब्धि उपलब्ध करने का उपाय पूछा गया तो भगवान ने कहा-'जो साधक निरंतर दो-दो दिन का निर्जल उपवास करता है, पारणा में मुट्ठी भर उड़द खाता है और एक चुल्लू भर पानी पीता है, भुजाओं को ऊंचा कर सूर्य की आतापना लेता है, वह छह। मास के भीतर तेजोलब्धि प्राप्त कर सकता है।' निष्कर्ष की भाषा में यह कहा जा सकता है। कि भगवान महावीर की अथवा जेनों की साधना पद्धति तैजसप्रधान पद्धति है। इस पद्धति। के अनुसार साधना करने वाला साधक तेजस-शक्ति का यथेष्ट विकास कर सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(७५)

प्यास हरो न हरो जलधर! पर दिखला दो परछाई।
ज्ञान भरो न भरो श्रुतधर पर दो श्रुत! की गहराई।।

धरती पर देखा हमने तुम पहुँचे नील गगन में
अम्बर में जब खोजा तो तुम जा पहुँचे कानन में
सघन वनों में खोज तुम्हारी सफल नहीं हो पाई
मिली नहीं अन्यत्र कहीं भी छवि ऐसी मनभायी
जन-जन के मानस में तुम रहते कैसे मायावी!

नए-नए धर रूप स्वयं को तुमने यहाँ छिपाया
तुम्हें देखने पल-पल मेरा अंतर्मन अकुलाया
सूख गया जब रिश्तों का रस तुमने सबको जोड़ा
सदियों से जो जमे हुए उन संस्कारों को तोड़ा
तब ही से तुम बने देव! हम सबके उत्तरदायी।।

सत्य साधना के बल से आलोक अनोखा पाया
जहाँ-जहाँ था तिमिर वहाँ तुमने उसको फैलाया
चाह तुम्हारी यह वसुधा अब स्वर्गतुल्य बन जाए
नैतिकता के गान धरा का कण-कण फिर से गाए
पाट चुके तुम साम्यभाव से लघु महान की खाई।।

रहे हमारे बीच सदा पर ज्ञेय नहीं बन पाए
उत्पथ में जब कदम बढ़े तो तुमने गीत सुनाए
सही रूप क्या देव! तुम्हारा एक बार दिखलाओ
हो पहचान तुम्हारी पूरी ऐसी कला सिखाओ
जान सकें हर समय तुम्हारी यह असीम ऊँचाई।।

(७६)

भीड़ में रहकर केली में खड़ी हूँ
तुम मुझे कोई नया संसार दे दो
फूल-सा मौसम तुम्हें सौगात में दूँ
तुम मुझे खुशियों भरा त्योहार दे दो।।

चित्र अनगिन आज तक मैंने बनाए
इंद्रधनुषी रंग उनमें कब भरूँगी?
सामने मंजिल खड़ी पर सफर लंबा
प्रतीक्षा का यह समंदर कब तरूँगी
ज्योति का झरना बहाते तुम निरंतर
तिमिर के भय से अकारण क्यों डरूँगी?
मोह की बदली उमड़ती जा रही जो
पवन बन संहार उसका कब करूँगी?
थमा दो पतवार इन नाजुक करों में
फिर भले तूफान या मझधार दे दो।।

सत्य के साधक अलौकिक देवते! तुम
साधना-पथ में नया दीपक जलेगा
स्वप्न देखा आत्मदर्शन का कभी जो
वह तुम्हारे मार्गदर्शन में फलेगा
जिंदगी का पाठ हर तुमसे पढ़ूँगी
फिर न कोई प्रलोभन मुझको छलेगा
स्वयं की उपलब्धि में बाधक बना जो
वंचना का वह हिमालय खुद गलेगा
गीत निर्झर से अधिक मीठे तुम्हारे
स्वयं नहीं तो मौन की झंकार दे दो।।

साधना सार्थक बनेगी देव! कैसे
नियम उसके कुछ नए तुम ही बताओ
बंद कब से द्वार हैं इस चेतना के
दे सकूँ दस्तक कला ऐसी सिखाओ
अर्घ्य आस्था का समर्पित कर रही मैं
भीति मन की दूर अब तुम ही भगाओ
शिखर अब अध्यात्म का छूना मुझे है
चढ़ूँ कैसे राह सीधी तुम दिखाओ
चित्त में हो वास अब स्थायी तुम्हारा
मुझे इस विश्वास का उपहार दे दो।।

(क्रमशः)

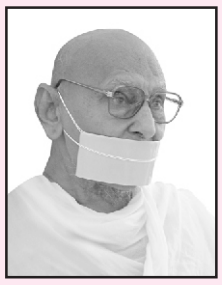

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२) ज्ञानस्यावरणेन स्याद्, अज्ञानं तत्प्रभावतः।
अज्ञानी नैव जानाति, वितथं वा यथातथम्।।

भगवान् ने कहा—ज्ञान पर आवरण आने से अज्ञान होता है। उसके प्रभाव से अज्ञानी जीव यथार्थ अथवा अयथार्थ—कुछ भी नहीं जान पाता।

(३) नैतद् विकुरुते लोकान्, नापि संस्कुरुते क्वचित्।
केवलं सहजालोकं, आवृणोति निजात्मनः।।

यह आवरण जीवों को न विकृत बनाता है और न संस्कृत। यह केवल अपनी आत्मा के सहज प्रकाश को ढकता है।

(४) ज्ञानस्यावरणं यावद्, भावशुद्ध्या विलीयते।
अव्यक्तो व्यक्ततामेति, प्रकाशस्तावदात्मनः।।

भावों की विशुद्धि के द्वारा ज्ञान का जितना आवरण विलीन होता है, उतना ही आत्मा का अव्यक्त प्रकाश व्यक्त हो जाता है।

(५) पदार्थास्तेन भासन्ते, स्फुटं देहभृताममी।
ज्ञानमात्रमिदं नाम, विशेषस्याऽविवक्षया।।

आत्मा के उस प्रकाश से संसार के ये पदार्थ स्पष्ट रूप से प्रतिभासित होते हैं। यदि उसके विभाग न किए जाएँ तो उस प्रकाश को ज्ञानमात्र ही कहा जा सकता है।

ज्ञान के स्वरूप को समग्र दृष्टिकोण से देखें तो वह एक है। उसके विभाग नहीं होते। जहाँ विभाग किए जाते हैं वहाँ उसका प्रकाश कुछ सीमाओं में बंध जाता है। बिजली का प्रकाश बल्ब की ही शक्ति पर निर्भर करता है। वैसे ही ज्ञान आवरण की तारतमता पर आधारित है। वह ज्ञान है लेकिन पूर्ण विशुद्ध नहीं। अविशुद्धि के आधार पर उसके पाँच विभाग होते हैं। पाँचवाँ विभाग पूर्ण शुद्ध है।

(१) मतिज्ञान—इंद्रिय और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान। (२) श्रुतज्ञान—शब्द, संकेत और स्मृति से होने वाला ज्ञान। (३) अवधिज्ञान—मूर्त द्रव्यों को साक्षात् करने वाला ज्ञान। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से इसकी अनेक अवधियाँ—मर्यादाएँ हैं, इसलिए इसे अवधिज्ञान कहा जाता है। (४) मनःपर्यवज्ञान—मन की पर्यायों को साक्षात् जानने वाला ज्ञान। इससे दूसरे के मन को पढ़ा जा सकता है। (५) केवलज्ञान—पूर्ण शुद्ध ज्ञान। ज्ञानावरणीय कर्म के पूर्ण क्षय होने पर पूर्ण ज्ञान प्रकट हो जाता है। उस स्थिति में आत्मा के लिए कोई अज्ञेय नहीं रहता। आवृत्त दशा में ज्ञान अपूर्ण रहता है। सूर्य के साथ इसकी तुलना घटित होती है। जैसे बादलों से ढके हुए सूर्य का प्रकाश स्पष्ट नहीं होता और बिना बादलों के प्रकाश स्पष्ट होता है, वैसे आवृत्त दशा में आत्मा का ज्ञान स्पष्ट नहीं होता। ज्यों-ज्यों आवरण हटता है, त्यों-त्यों प्रकाश होता जाता है।

'केवल' शब्द के पाँच अर्थ हैं—असहाय, शुद्ध, संपूर्ण, असाधारण और अनंत।

केवलज्ञान का विषय सब द्रव्य और पर्याय है। कुछ आचार्य इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं कि केवलज्ञानी वह है जो आत्मा को सर्वरूपेण जानता है।

उपर्युक्त पाँच ज्ञानों में प्रथम दो ज्ञान परोक्ष और अंतिम तीन प्रत्यक्ष ज्ञान हैं। जो ज्ञान इंद्रिय-सापेक्ष होता है, वह परोक्ष और जो आत्म-सापेक्ष होता है, वह प्रत्यक्ष कहलाता है।

वस्तुवृत्त्या ज्ञान एक ही है—केवलज्ञान। आवरणों की अपेक्षा से उसके पाँच भेद होते हैं। जब आवरण पूर्ण रूप से टूट जाता है तब संपूर्ण ज्ञान—केवलज्ञान प्रकट हो जाता है। **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

दान धर्म

प्रश्न १६ : करण किसे कहते हैं?

उत्तर : योग के द्वारा होने वाली क्रिया को करण कहते हैं। उसके तीन प्रकार हैं—करना, कराना व अनुमोदन करना। आचार्यों ने कहीं-कहीं योग को भी करण कहा है।

प्रश्न १७ : क्या तीनों करण का स्वरूप सदृश है?

उत्तर : तीनों करण का स्वरूप सदृश है। यदि किसी प्रवृत्ति के करने में पाप होता है, तो कराने में भी पाप होता है और अनुमोदन में भी पाप होता है। इसी भाँति जिस प्रवृत्ति के करने में धर्म होता है, तो उसके कराने व अनुमोदन में भी धर्म होता है। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य अभयदेव (नवांगी टीकाकार)

अभयदेव नाम के कई आचार्य हुए हैं। प्रस्तुत आचार्य अभयदेव की प्रसिद्धि नवांगी टीकाकार के रूप में है। अभयदेव श्रमनिष्ठ आचार्य थे। संस्कृत भाषा पर उनका प्रभुत्व था। उनकी स्वाद-विजय की साधना दूसरों के लिए आदर्शभत थी।

आचार्य अभयदेव का जन्म वैश्य परिवार में वी०नि० १५४२ (वि० १०७२) में हुआ। इतिहास प्रसिद्ध मालव की धारानगरी उनकी जन्मभूमि थी। महीधर श्रेष्ठी के वे पुत्र थे। उनकी माता का नाम धनदेवी था। उनका अपना नाम अभयकुमार था। धारा में उस समय नरेश भोज का शासन था।

आचार्य अभयदेव का विवेक बचपन से ही अधिक प्रबुद्ध था। धार्मिक संस्कारों की निधि उन्हें अपने परिवार से सहज उपलब्ध थी। एक बार जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि का पदार्पण हुआ। पिता महीधर के साथ बालक अभयकुमार ने उनका प्रवचन सुना। वैराग्य का रंग बालक के मन पर चढ़ गया। माता-पिता की आज्ञा लेकर अभयकुमार ने जिनेश्वरसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की। आगमों का बालमुनि ने गंभीरता से अध्ययन किया। ग्रहण और आसेवन रूप विविध शिक्षाओं को गुरुजनों से उपलब्ध कर महाक्रियानिष्ठ श्रमण अभयदेव शासनकाल को विकसित करने के लिए भास्करवत् तेजस्वी प्रतीत होने लगे। आचार्य वर्धमानसूरि के आदेश से जिनेश्वरसूरि ने उन्हें आचार्य पद से अलंकृत किया।

आचार्य अभयदेव सिद्धांतों के गंभीर ज्ञाता थे। आगमेतर विषयों का भी उन्हें विशद ज्ञान था। वर्धमानसूरि के स्वर्गवास के बाद का घटना प्रसंग है—

प्रत्यपद्रपुर में रात्रि के समय आचार्य अभयदेव ध्यान में बैठे थे। टीका रचना की अंतःप्रेरणा उनके मन में उत्पन्न हुई। प्रभावक चरित्र आदि ग्रंथों के अनुसार यह प्रेरणा शासन देवी की थी। निशीथकाल में ध्यानस्थ अभयदेव के सामने देवी प्रकट होकर बोली—'मुने! आचार्य शीलांक एवं कोट्याचार्य द्वारा विरचित टीका साहित्य में आचारांग और सूत्रकृतांग आगम की टीकाएँ सुरक्षित हैं। अवशिष्ट टीकाएँ काल के दुष्प्रभाव से लुप्त हो गईं। अतः इस क्षतिपूर्ति के लिए संघ-हितार्थ आप प्रयत्नशील बनें एवं टीका-रचना का कार्य प्रारंभ करें।

अंतर्मुखी आचार्य अभयदेव बोले—'देवी! मेरे जैसे जड़मति व्यक्ति द्वारा सुधर्मा स्वामी कृत आगमों को पूर्णतः समझना भी कठिन है। अज्ञानवश कहीं उत्सूत्र की प्ररूपणा हो जाने पर यह कार्य उत्कृष्ट कर्मबंधन का और अनंत संसार की वृद्धि का निमित्त बन सकता है। शासन देवी के वचनों का उल्लंघन करना भी उचित नहीं है। अतः तुम्हारे द्वारा प्राप्त संकेत पर किंकर्तव्यविमूढ़ जैसी स्थिति मेरे में उत्पन्न हो गई है।'

आचार्य अभयदेव के असंतुलित मन को समाधान प्रदान करती हुई देवी ने निवेदन किया—'मनीषी-मान्य! सिद्धांतों के समुचित अर्थ को ग्रहण करने में सर्वथा योग्य समझकर ही मैंने आपसे इस महत्त्वपूर्ण कार्य की प्रार्थना की है, आगम पाठों की व्याख्या में जहाँ भी आपको संदेह हो उस समय मेरा स्मरण कर लेना। मैं सीमंधर स्वामी से पूछकर आपके प्रश्नों को समाहित करने का प्रयत्न करूँगी।'

आचार्य अभयदेव को शासनदेवी के वचनों से संतोष मिला। आगम जैसे महान् कार्य में तपोबल की शक्ति आवश्यक है। यह सोच नैरन्तरिक आचाम्ल तप (आयंबिल) के साथ उन्होंने टीका-रचना का कार्य प्रारंभ किया। एकनिष्ठ से वे अपने कार्य में लगे रहें। अपनी श्रमपरायण वृत्ति के कारण वे नौ आगमों पर टीका ग्रंथों की रचना में सफल हुए। टीका-रचना करने के बाद आचार्य अभयदेव का धवलकपुर में पदार्पण हुआ।

आत्मबल अनंत होता है, पर शरीर की शक्ति सीमित होती है। नैरन्तरिक आचाम्ल तप और रात्रि-जागरण से उन्हें कुष्ठ हो गया। विरोधीजनों में अपवाद प्रसारित हुआ—कुष्ठ रोग उत्सूत्र की प्ररूपणा का प्रतिफल है। शासनदेवी रुष्ट होकर उन्हें दंड दे रही है।

लोकापवाद सुनकर आचार्य अभयदेव का विश्वास भी डोला। अंतर्चिंतन चला। रात्रि के समय उन्होंने धरणेंद्र का स्मरण किया। शासन हितैषीधरणेंद्र ने निद्रालीन उनके शरीर को चाट कर स्वस्थ बना दिया।

(क्रमशः)

✦ *वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिंगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगल उद्गार

अर्हम्

● समणी संगीतप्रज्ञा ●

तेरापंथ धर्मसंघ के दैदीप्यमान ओजस्वी आचार्य परंपरा में नवम आचार्य गणाधिपति श्री तुलसी और दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ जी, दोनों ही आचार्य युगद्रष्टा, युगसृष्टा गणि थे। आचार्य श्री तुलसी ने क्रांति का सिंहनाद कर पूरे विश्व को चमत्कृत कर दिया। उनके क्रांतिकारी कार्य में सर्वश्रेष्ठ कड़ी है–समण श्रेणी। आचार्य तुलसी ने नूतन दीक्षा देकर संघ की श्रीवृद्धि की, क्योंकि समण श्रेणी ने विदेश की धरती पर कदम रखकर धर्मसंघ की प्रभावना में चार चाँद लगा दिए। यह हर्ष का विषय है कि एकादशम अधिशास्ता महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण की कृति साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ही समण श्रेणी की प्रथम सदस्या रही हैं और सर्वप्रथम विदेश की धरती पर चरणन्यास कर तेरापंथ धर्म का प्रचार-प्रसार कर अनिर्वचनीय निर्जरा की भागी बनी है।

वर्धापनं नूनं स्यात् योग्यस्य हितावहम्। इस अपनी ही उक्ति को चरितार्थ करते हुए साध्वी विश्रुतविभाजी को 'मुख्य नियोजिका' पद से अलंकृत कर उनका नाम बढ़ाया। जब अष्टम् साध्वीप्रमुखा, शासनमाता श्री कनकप्रभाजी का महाप्रयाण हो गया तब धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमण जी ने–

प्रजाक्षेमकृता सुपाश्रनिक्षेप निराकुलात्मना प्रजासृजा।
त्वं धनसम्पदां इव श्रुतीनां सदाउपयोगेऽपि अक्षयः गुरुः निधिः कृतः।।

शिशुपालवधम् में लिखे गए उपर्युक्त श्लोक की भाँति तेरापंथ धर्मसंघ की विशाल साध्वी समाज का संपूर्ण दायित्व साध्वी विश्रुतविभाजी को सौंपकर निश्चिंत हो गए अर्थात् जैसे ब्रह्मा प्रजा-जन के कल्याण हेतु सुपात्र व्यक्ति को नियोजित कर निर्भार निश्चिंत हो गए वैसे ही आचार्यश्री महाश्रमण जी भी गणाधिपति तुलसी और प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा परीक्षित शिक्षित दायित्वशील साध्वी को साध्वी समाज का दायित्व देकर निश्चिंत हो गए। ऐसे ज्ञानी, ध्यानी, मौनी, तपस्विनी साध्वी को साध्वीप्रमुखा के रूप में पा परम आह्लाद की अनुभूति हो रही है, संपूर्ण तेरापंथ समाज को।

अंत में– **गणप्रवालं विनयप्रशाखं विश्रम्भमूलं, महनीयपुष्पम्।**
तं साधुवृक्षं स्वगुणैः फलाढ्यं सुहृक्विहङ्गः सुखमाश्रयन्ति।।

अर्हम्

● समणी अक्षयप्रज्ञा ●

आचार्यत्रय द्वारा तराशे गए व्यक्तित्व की अभिवंदना।

श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी का जीवन अनेक विरल विशेषताओं का समवाय है। आपकी पवित्र चरित्र संपनन्नता अप्रमत्तता, अद्भुत संयम चेतना, अध्यात्म चेतना, विशिष्ट सहिष्णुता, विनम्रता, अनुपम समता, अनूठी गोपनीयता, उत्कृष्ट मर्यादा निष्ठा, नीतिनिष्ठा, आचारनिष्ठा, श्रम निष्ठा विलक्षण प्रशासन कौशल आदि अनेक विशेष गुणों की अभिवंदना कर गौरव की अनुभूति कर रहे हैं। सफलता के शिखर पर आपका आरोहण एकमात्र आपकी साधना व संतता का सुफल है।

आपका जीवन अनुभवों का जीता-जागता खजाना है। आचार्यत्रय के आभावलय एवं सन्निधि में रहकर आपने विविध मुखी बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किए हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के शासन काल में प्राप्त अनुभवों की थाती भी आपके पास है। उन अनुभवों का उपयोग एवं प्रयोग संघ की गौरववृद्धि एवं विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध हो, ऐसी हमारी आंतरिक अभिलाषा है। पूज्यप्रवर के आशीर्वाद और आपके आध्यात्मिक नेतृत्व में हम चित्त समाधिपूर्वक अपनी जीवनयात्रा को निर्बाध गति से गतिशील बनाती हुई आपके सफल, सुखद व शुभ भविष्य की मंगलकामना करती है। आप चिरायु हो, स्वस्थायु हो, निरामय रहते हुए धर्मसंघ को प्रलंब काल तक अध्यात्म की ऊँचाइयाँ प्रदान करते रहें।

अर्हम्

● समणी भावितप्रज्ञा ●

स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरुदेव को भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा था–मैंने जो कुछ पाया है, मेरे शब्दों, विचारों या क्रियाओं से दुनिया के किसी व्यक्ति को कुछ भी सहयोग उपलब्ध हुआ है, उसका सारा श्रेय मेरे महाप्रभु को है। आज मैं जो कुछ बन पाई हूँ, उसमें आपका बड़ा रोल है। मैं आपका उपकार जीवन भर नहीं भूल पाऊँगी। आपश्री की जब साध्वीप्रमुखा पद पर नियुक्ति हुई, तब मुझे अत्यधिक प्रसन्न्ता व उल्लास का अनुभव हुआ। आपश्री के प्रति यह मंगलकामना करती हूँ कि आप निरामय एवं स्वस्थ रहें और हम सबका दीर्घकाल पर्यन्त नेतृत्व करती रहें।

अर्हम्

● समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा ●

विश्वास एक छोटा सा शब्द है जिसे बोलने में एक सैकंड लगता है, लिखने में दो सैकंड, समझने में कुछ दिन लग सकते हैं, किंतु उसे साबित करने में पूरा जीवन लग जाता है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने अपनी उत्कृष्ट सेवा, श्रद्धा व समर्पण से तीन-तीन गुरुओं का विश्वास जीता। उसी विश्वास का परिणाम है कि आज आप साध्वी समाज के सर्वोच्च पद पर आसीन हैं।

आप समण श्रेणी से जन्म से ही जुड़ी हुई हैं। आपने पग-पग पर हमें संस्कार दिए, हमारी सारणा-वारणा की है। समण श्रेणी आपकी हमेशा ऋणी रहेगी। आज पूरे समण श्रेणी की ओर से शुभकामना व मंगलकामना करती हूँ, आशा करती हूँ कि हम भी आपके जीवन से कुछ प्रेरणा लें, अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहें।

Right Efforts leading to Good Fortune

● Samani Chaitanya Prajna ●

The word 'Fortune' indicates Luck, Prosperity,Wealth, Chance, and Future. The life of present Sadhvi-pramukha, the Head of hundreds of nuns of Terapanth tradition, is the living example of the good fortune. The secret of her good fortune is her dedication and devotion to her own spiritual goal of life and to the administrative responsibility given to hertime to time by the learned Acharyas of Terapanth.

Samana-shreni, the new ascetic tradition, is established first time in the history of Jainism with the dedication of six Mumukshu sisters among them one was present Sadhvi-pramukhaji. Not only she has shown her full dedication to this extra-ordinary and epoch-making vision of Acharya Tulsi and Mahapragya to follow unknown and untrodden path but also proven herself as the best Samani of her time.

She is very disciplined and having good control on herself. Due to her self-control, she has proven herself a good administrator. As the sage Chankya has rightly said that one can be a good king if one has self-control. She has influenced all the younger Samanijis by leaving a rigorous spiritual life. They got inspirations and directions at every step from her to proceed on the path of spirituality. They have learnt how their life should be according to their spiritual goal. It is really a great success of a person when other get influenced and inspired just by looking at one's life.

As a first Niyojika, Administrator of Samanijis, she has given directions to Samani-order in such a way that it has not only created a new momentum in Terapanth tradition but also created a great momentum in entire Jain community in India and abroad. They have appreciated the self-restraint, higher knowledge and effective expression of Samanijis and invited them to create centers in abroad to disseminate Jain teachings on the foreign lands. With the blessings of all the Acharyas of TerapanthSamanijis worked hard on forighn lands and in result, the Orlando, Huston, New Jersey, London and Miami centers came into existence. Hundreds of families of all Jain traditions of various countries are getting knowledge from Samanijis by visiting regularly to these centers.

By opening a new door of higher studies and research in the field of Jainism in western universities like Florida International University, Miami, USA and North Texas University, Dallas, USA Samanijis have shown a new light to disseminate Jain teachings all over the world. By their visit and initiative Jainism has come out of Indian boundaries and reaching to those also who are not Jains or Indians. This new initiative has created so much influence that by following the FIU model of Jain Studies and Research people of Jain community of USA have opened 40 Chairs of Jain Studies in various western universities and contributed a lot to bring up on the map of wester academia.

Looking at the extra-ordinary work done by Samanijis in the field of Jain religion now Acharyas of other Jain traditions have also started following this new model of Jain asceticism in their own traditions.

I am lucky enough to get opportunity to start my Samani life under the guidance of the present Sadhvi-pramukha Shree Vishrutvibhaji and lived with her for years. I was very much influenced by her self-discipline and time-management. She is unique in time-management too. She is no doubt managing time for her personal and administrative work but also managing time of her spiritual journey. She is very alert in fixing in how many years she has to reach which level of spiritual development.

In concluding remarks, her constant inner awareness to her own spiritual goal of life and great devotion to assigned work have played great role in creating a good fortunate to her. Her faithful dedication to visionary Acharya Tulsi, Acharya Mahapragya and Acharya Mahashraman has always given her good opportunities to work on some or other higher positions in the administration of Terapanth order. She has ever been lucky and progressive in her spiritual life. I wish all the great success in her new responsibility as a Sadhvi-pramukha. No doubt her long experience and Sadhana would make her unique in this new field too.

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगल उद्गार

अर्हम्

● समणी कमलप्रज्ञा ●

गुरु दृष्टि व गुरु सृष्टि का अभिनंदन है,
गुरु भक्ति व गुरु शक्ति का अभिनंदन है,
समण श्रेणी की नींव से निकला यह पत्थर,
(जिसे) सुसंस्कृत, सुसज्जित व प्रतिष्ठित करने वाले,
महान कलाकार का अभिनंदन है---।।

धन्य हुआ वह पल, जिस समय युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने नवम साध्वीप्रमुखा पद के लिए आदरणीया मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी का नाम अपने श्रीमुख से उच्चारित किया। अतः आज हम उस पल का अभिनंदन करते हैं, वंदन करते हैं।

धन्य हुई वह पावन धरा, जहाँ पर नवम प्रमुखा पद का नव्य प्रभात प्रस्फुटित हुआ अतः आज हम इस वंदनीय प्रभात का अभिनंदन करते हैं। वंदन करते हैं। तथा धन्य हुए हम सभी जो कि इस दुर्लभतम परम आह्लादकारी, मनहारी दृश्य के प्रत्यक्ष साक्षी बन पाए, अतः आज हम उस आह्लादकारी दृश्य के सृष्टा पुरुष का दृढ़तम श्रद्धाभाव से अाभिनंदन करते हैं, वंदन करते हैं।

हे नवम साध्सवीप्रमुखे! आपश्री की अप्रतिम प्रतिभा, अतुलनीय बौद्धिकता, अमाप्य आध्यात्मिकता, पंचाचार निष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुभक्ति की पराकाष्ठा की तो हम प्रारंभ से ही कायल तो थीं ही पर अब आपश्री की अनुत्तर संयम साधना तथा तपस्या के अकंप भाव से हम सभी बहुत प्रभावित हैं।

आपश्री के जीवन प्रेरणा से हम सतत प्रेरित होती रहें, यही अभिकांक्षा है। वर्धापन के इस पावन प्रसंग पर विनत भाव से यही प्रार्थना करती है कि–

रख दो सिर पर हाथ महासतीवरं,
तब ऊर्जा से प्राणवान बन जाए।
रखना महर दृष्टि हरपल जिससे,
राह हमारी निश्काटक, निर्बाध बन जाए।।

अर्हम्

● समणी मधुरप्रज्ञा ●

तप, जप, ध्यान, पुरुषार्थ, भाग्य, सकारात्मक सोच, अंतर्मुखी दृष्टिकोण, सृजनशील चेतना, गुरु कृपा और गुरुदृष्टि आराधन का समन्वित रूप है साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा। आप भाग्य साथ लेकर आई तो पुरुषार्थ की लौ को भी सतत प्रज्वलित रखा। अप्रमत्तता आपका उत्कृष्ट आभूषण है। तप को जीवन का शृंगार बनाया तो जप भी आपका सतत आधार रहा एवं ध्यान द्वारा वृत्तियों को ऊर्ध्वमुखी बनाया।

जीवन में उतार-चढ़ाव के क्षणों में सकारात्मक सोच आपके अंतर्मुखी दृष्टिकोण का प्रतीक है। सकारात्मक सोच के प्रवर्धमान निर्मलता, पवित्रता ने जीवन में उन्नति के द्वार उद्घाटित किए हैं। तेरापंथ संघ में प्रविष्टि के साथ अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से क्रमशः नेतृत्व की ऊँचाईयों को हासिल किया है। उसका मूर्त रूप हमारे सामने है मुमुक्षु सविता से साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी तक का सफर।

आपने अपने जीवन में प्रायः समय का सदुपयोग किया है। आगम कार्य में संपृक्तता और आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य संपादन व ट्रांसलेशन में सतत संलग्न रहना या व्यवस्था द्वारा दूसरों को भी इस कार्य में योजित कर साहित्य के दुरुह कार्य को निष्ठा तक पहुँचाया है।

जीवन की इस ऊर्ध्वगामी यात्रा में गुरु कृपा का प्रसाद आपके जीवन की बहुत बड़ी ख्यात है। तीन-तीन आचार्यों का अनुग्रह भाग्य का प्रतीक है। सचमुच इस मायने में आप भाग्यशाली रहे हैं। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी न आपको कसौटी पर कसके 'साध्वीप्रमुखा' जैसे महनीय पद पर स्थापित किया है। आपके कुशल व मंगल नेतृत्व के प्रति हार्दिक शुभकामना।

अर्हम्

● समणी सुमनप्रज्ञा ●

विभाजी का जीवन हीरे के समान है। जिस प्रकार से खादान से निकला हीरा एक पत्थर ही हुआ करता है। जौहरी उस पत्थर को परखता है, यह कोई सामान्य पत्थर नहीं अपितु हीरा है, उसे तराशा है, तराशने के लिए कितनी ही बार विविध प्रकार की परिक्षाओं से गुजरने के बाद कौड़ी जितनी कीमत वाला पत्थर करोड़ों की कीमत वाला बन जाता है। वैसे ही आपश्री को गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने आपके जीवन को परखा, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तराशा व युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अनेक परिक्षाओं के बाद करोड़ों की कीमत वाला हीरा जिसे साध्वीप्रमुखा पद पर नियोजित कर मूल्यवान बना दिया।

हीरे की परख के तीन घटक

– कलर, कटिंग, कैरेट।
उसी प्रकार आपकी साधना के मुख्य तीन घटक
– समता, सजगता, शालीनता।

समता : पेन को चलाने के लिए पेपर चाहिए पत्थर नहीं। ट्रेन को चलने के लिए पटरी चाहिए सड़क नहीं। वैसे ही आपश्री का जीवन सकारात्मक चिंतन की नींव पर समता का वटवृक्ष लेकर खड़ा है व समता की लेखनी से नव इतिहास को रचा है।

सजगता : अप्रमत्तावस्था/भारुण्ड पक्षी की तरह आपश्री के जीवन का मूल मंत्र सजगता ही जीवन है। स्वाध्याय के प्रति, तप-जप के प्रति, नीति नियमों के प्रति सजग रहते हैं व हम सबको प्रेरणा देते रहते हैं। जैसे (परीक्षण, परीक्षण करना, परीक्षार्थी) कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं हो रही। धर्मसंघ के नियम विरुद्ध कोई बात तो नहीं हो रही है आपश्री के गुण गुरु के प्रति समर्पण भाव से प्रकट हुआ, सैनिक की तरह आपकी आत्मा के प्रति व संघ के सदस्य के प्रति सजगता रखवाते हैं।

शालीनता : शाली यानी चावल जैसे चावल निर्मल, धवल, सौम्य व भीतर बाहर एक जैसा होता है, वैसे ही आपश्री का जीवन स्फटिकमय शाली की तरह निर्मल व सौम्य, भीतर बाहर एक जैसा है।

अभ्यर्थना के इन स्वरों में---

समता, सजगता, शालीनता की अप्रतिम प्रतिमा को वंदन है।
दिव्य कोहिनूर सतीशिरोमणी सतिशेखरे वर्धापन है।।

अर्हम्

● समणी मननप्रज्ञा ●

जब मैं समण श्रेणी में दीक्षित हुई, उस समय समण श्रेणी की सार-संभाल साध्वी विश्रुतविभाजी करते थे। दीक्षा के तीन महीने बाद मेरे असातवेदनीय का उदय हुआ और मेरे हाथ फफोलों से भर गए। बीदासर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का चातुर्मास था। मैं गुरुदेव के गई। साध्वी विश्रुतविभाजी ने सारी स्थिति गुरुदेव को निवेदन की। गुरुदेव ने मुझे चिकित्सा हेतु दक्षिण भेजा। तीन वर्ष तक निरंतर दक्षिण में ईलाज चला। डॉक्टर का कहना था जीवन भर सर्फ-साबुन में हाथ नहीं डाल सकोगी। डॉक्टरी दवा में भी काम किया किंतु साध्वी विश्रुतविभाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को निवेदन कर मुझे मंत्र के प्रयोग भी दिए। गुरुदेव के आशीर्वाद से आज मेरे हाथ एकदक ठीक हैं।

साध्वी विश्रुतविभाजी ने मेरा बहुत ध्यान रखा। जब मैं यात्रा में जाती। मेरी हर निर्देशिका को मेरा ध्यान रखने का निर्देश देते। उनके इस वात्सल्य को मैं कभी नहीं भूल सकती। उन्होंने मेरा जो ध्यान रखा उसक प्रति में श्रद्धाप्रणत हूँ। आज साध्वीप्रमुखाश्री जी के रूप में आपकी वर्धापना करते हैं।

अर्हम्

● समणी करुणाप्रज्ञा ●

बूँद से समंदर, लघु से विराट, अणु से विभु तथा तलहटी से शिखर की यात्रा वही व्यक्ति कर सकता है। जिसके भीतर साधना, शक्ति व क्षमता के प्रस्फोटन का विशेष Power होता है। साध्वी शिरोमणी साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी का व्यक्तित्व Power शब्द से अनुप्राणित है। मुमुक्षु सरिता से साध्वीप्रमुखा तक की यात्रा में यात्रायित आपश्री में–

P - Patience : बिना पैशन्स कोई भी व्यक्ति महानता का वरण नहीं कर सकता। धैर्य से ही व्यक्ति के नेतृत्व कौशल में निखार आता है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण के समय तथा जीवन में आने वाली अनेक परिस्थितियों में आपश्री का धृतिबल गजब का था। कहा जाता है–'धीरा सो गंभीरा' जो धीर होता है वह गंभीर होता है।

O - Open Mind : खुला दिमाग। आप स्वयं Open Mind की पराकाष्ठा है तथा दूसरों को भी यही प्रेरणा देती हैं। एरोप्लेन जैसे-जैसे ऊँचाइयों की ओर बढ़ता है, वैसे-वैसे मानव, पेड़-पौधे और मकान आदि छोटे नजर आने लगते हैं या दिखाई नहीं देते। वैसे ही साधना की ऊँचाइयों को प्राप्त करने वाला साधक छोटी-छोटी बातों में उलझता नहीं।

W - Wisdom : दो प्रकार की प्रतिभा होती है–(१) पानी में फैली धृत बिंदु के समान संकोचशील। (२) पानी में फैली तैलबिंदु की तरह प्रसरणशील। ज्ञान की दीपशिखा साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी की प्रतिभा पानी में फैली तैलबिंदु के समान प्रसरणशील है। आपश्री का ज्ञान Street Light की तरह हर किसी के लिए उपयोगी बनता है। महाप्रज्ञ वाङ्मय, आगम संपादन, महाप्रज्ञ प्रबोध आदि का सृजन हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान तथा प्रभावी वक्तृत्व शैली इसका प्रमाण है।

E - Enhanced talerance power : आपश्री के भीतर उत्कृष्ट कोटि का सहनशीलता रूपी 'होर्स पावर' है। जिस गाड़ी में जितना अधिक होर्स पावर है वह उतना अधिक भार उठा पाती है। कम होर्स पावर हो जिस गाड़ी में उसमें भार उठाने की क्षमता कम होती है। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपनी पैनी दृष्टि से आपके भीतर रहे सहनशीलता रूपी होर्स पावर' को पहचानकर इतने साध्वीश्री जी, समणीजी तथा मुमुक्षु बहनों की सार-संभाल, व्यवस्था का भार आपश्री के कंधों पर डाला।

R - Research for New : आपश्री की दृष्टि कुछ न कुछ नया ढूँढ़ने में लगी रहती है। कहा जाता है–'हंस तो मोती चुगे' अनेक बालूकणों में हंस मोती को, मेग्नेट, लोहकणों को ही ग्रहण करता है, वैसे ही आपश्री की सूक्ष्म दृष्टि ज्ञान के नवीन मुक्ताओं को चुगती है।

इसी Super power से युक्त आपश्री का व्यक्तित्व होने के कारण आज आप तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वी समाज की शिरोमणी बनी। आज हम अंतःकरण से आपश्री का वर्धापन करते हैं।

'मौन व मुखर प्रेरणा का निर्झर हर पल बहता रहे।
तब छत्र छाँव का दिव्य शकून सतत हमें मिलता रहे।।

अर्हम्

● समणी सन्मतिप्रज्ञा ●

भविष्य कुछ नहीं, उसका निर्माण किया जाता है। उसका निर्माण भविष्यदर्शी या अतीतदर्शी नहीं करता, परिणामदर्शी करता है। महानयोगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सृजन और परिणामदर्शी आचार्यश्री महाश्रमण का चयन है–साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी। आपका चयन तेरापंथ में साध्वी समाज के लिए वरदायी बने। आप स्वस्थ रहते हुए गति-प्रगतिशील रहें। १५ मई, २०२२, आचार्य महाश्रमण कल्याण दिवस आपके जीवन में एक नए जीवन के उद्भव दिवस है, ये दिवस आपको सदियों तक उपलब्ध होता रहे।

शिवं भूयात्---

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ स्थापना दिवस के विविध आयोजन

किशनगंज, बिहार

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में किशनगंज तेरापंथ भवन में २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ महिला मंडल ने भिक्षु अष्टकम् के द्वारा किया। साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि जैन शासन का उदितोदित धर्मसंघ है—तेरापंथ। आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और संघ निष्ठा का प्रत्येक संघ है—तेरापंथ।

आज के दिन आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा ग्रहण की। अंधेरे में प्रकाश किया था, दीप जलाया था वह दीप आज सूर्य बनकर के हमें प्रकाशित कर रहा है। इसी क्रम में साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी ने आचार्य भिक्षु के प्रति अभ्यर्थना की। सभा अध्यक्ष विमल दफ्तरी, महासभा संरक्षक राजकरण दफ्तरी, महिला मंडल अध्यक्ष संतोष दुगड़,तेयुप अध्यक्ष अमित दफ्तरी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष संजय बैद ने अपने-अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वीश्री जी ने किया।

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में २९७वाँ आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस एवं २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। कानपुर तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज के दिन वि०सं० १९८३ में मारवाड़ के कांटा प्रांत के कंटालिया ग्राम में भिक्षु का अवतरण हुआ। यह अवतार था शक्ति का, क्रांति का, ज्योति का और शांति का। वि०सं० १८१७ में आषाढ़ी पूर्णिमा का दिन गुरु पूर्णिमा का दिन होता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि इस महत्त्वपूर्ण दिन पर हमें सहज ही सच्चे गुरु और धर्मसंघ मिला।

साध्वी भावनाश्री जी ने आचार्य भिक्षु के युग और वर्तमान युग की तुलना कर सुंदर कविता प्रस्तुत की। साध्वी सुधाकुमारी जी ने तेरापंथ स्थापना पर गीत का संगान किया। साध्वीवृंद ने भिक्षु स्वामी के संघर्षों पर आधारित गीत प्रस्तुत किया। टीकमचंद सेठिया, सभा मंत्री संदीप जम्मड़ एवं महिला मंडल ने गीत, वक्तव्य द्वारा अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की। शाम को महिला मंडल ने चातुर्मास पक्खी का प्रतिक्रमण सामुहिक किया। तत्पश्चात सभा द्वारा धम्म जागरण का आयोजन किया गया। साध्वीवृंद ने गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम से पूर्व साध्वीश्री जी ने वर्षावास की स्थापना की एवं चातुर्मास का महत्त्व बताया। दो दिवसीय कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया। धम्म जागरण का संयोजन सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन, भीलवाड़ा में डॉ० साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस का समायोजन हुआ। डॉ० साध्वी परमयशाजी ने कहा कि तेरापंथ के इतिहास में आज का दिन महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि आज के दिन हमें एक महान गुरु मिले। वे एक अपराजेय व्यक्तित्व के धनी थे। वो किसी कॉलेज में नॉलेज लेने नहीं गए फिर भी वे एक महान साहित्यकार थे, जिन्होंने ३८ हजार पद्य का सृजन किया था। अध्यात्म साधना के पर्याय प्रणेता थे आचार्य भिक्षु।

साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने भी अपने आराध्य के प्रति अपनी भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने गीत की स्वर लहरियों और तेरापंथ कहता है मर्यादा, अनुशासन और समर्पण में रहो का लघु संवाद की प्रस्तुति दी।

यशा, महिला मंडल, राजलदेसर-दिल्ली से समागत कमल दुगड़, अनिल बुच्चा, सुरेश चिप्पड़ ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में संजय, वणिता बाणावत ने अपनी मधुरिम स्वर लहरियों के साथ कार्यक्रम को भिक्षुमय बना दिया।

उधना

तेरापंथी सभा व तेयुप, उधना द्वारा २६३वें तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भव्य भक्ति संध्या तेरापंथोस्तु मंगलम का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। उधना भजन मंडली ने मंगलाचरण किया।

सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर व तेयुप अध्यक्ष सुनिल चंडालिया ने आमंत्रित संगायक कमल छाजेड़, दिल्ली एवं महेंद्र सिंघी, चेन्नई दोनों संगायकों का स्वागत किया। दोनों गायकों द्वारा नवकार महिमा, प्रभु पार्श्वनाथ, भगवान महावीर आदि नए-पुराने गीतों की रोचक प्रस्तुति दी गई। गायक पारस गोलछा, रितेश जैन, दिल्ली एवं उधना के भजन मंडली प्रभारी मानव दुगड़ द्वारा भी गीतों की प्रस्तुति दी गई। भक्ति संध्या में तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

धर्म की फसल उगाने का समय है चातुर्मास

अणुव्रत भवन, दिल्ली।

चातुर्मास मंगल प्रवेश हेतु साध्वी संघमित्रा जी का विशाल जुलूस गांधी शांति प्रतिष्ठान से प्रारंभ होकर मुख्य मार्गों से होता हुआ अणुव्रत गीत, नशामुक्ति व अहिंसा के जयघोषों को गुंजाते हुए अणुव्रत भवन पहुँची। स्वागत में आयोजित अहिंसा रैली सभा में परिणत हुई।

शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि चातुर्मास में अध्यात्म के बीजों का वपन कर जीवन में सद्गुणों की त्याग, तप व धर्म की फसल उगाने का समय है। यह समय खुद की तलाश का एक अनूठा मौका है। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर समाज में नई चेतना लाएँ, जिससे समरसता का वातावरण बने।

शासनश्री साध्वी शीलप्रभाजी ने समाज को चतुर्मास में करणीय कार्यों की प्रेरणा देते हुए गीत के माध्यम से सबको भावविभोर कर दिया। डॉ० साध्वी सूरजयशा जी ने कहा कि यह समय जीवन के चित्र में सद्गुण की तूलिका से रंग भरने का समय है। साध्वी समाधिप्रभा जी ने कहा कि चातुर्मास काल में अधिकाधिक धर्माराधना करनी चाहिए। उन्होंने प्रेरक गीत के माध्यम से करणीय कार्य बताए।

साध्वी ओजस्वी प्रभाजी ने कहा कि चातुर्मास बाह्य यात्रा से अंतरयात्रा की ओर प्रस्थान करने का स्वर्णिम समय है। उन्होंने बारी के उपवास, तेला आदि के लिए नाम लिखाने को कहा।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु जैन, सभा पूर्वाध्यक्ष गोविंदराम बाफना आदि ने जुलूस में सहभागिता दर्ज की और अणुव्रत भवन प्रवेश कर स्वागत किया। इसके पश्चात साध्वीश्री जी के अभिनंदन स्वागत का कार्यक्रम हुआ। मंगलाचरण ममता दुगड़ ने किया। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। दिल्ली सभा से बाबूलाल दुगड़, महिला मंडल से यश बोथरा, तेयुप से अभिनंदन बैद, गांधीनगर से सभाध्यक्ष कमल गांधी, गुरुग्राम सभा के अध्यक्ष विमल सेठिया, उत्तर मध्य के अध्यक्ष प्रसन्न पुगलिया, दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, अणुव्रत समिति से कल्पना सेठिया, रमेश कांडपाल, अणुव्रत न्यास के के०सी० जैन आदि ने अभिनंदन किया। संचालन महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने व आभार ज्ञापन शांति कुमार जैन ने किया।

आचार्य भिक्षु का २९७वाँ जन्मदिवस एवं बोधि दिवस

टी-दासरहल्ली।

आचार्य भिक्षु का २९७वाँ जन्म दिवस एवं २६५वाँ बोधि दिवस तेरापंथ भवन में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई।

सभा ट्रस्ट अध्यक्ष नवरतन गांधी ने स्वागत वक्तव्य दिया। महिला मंडल ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना अर्पित की। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का २६५वाँ बोधि दिवस हमें आत्म जागृति की प्रेरणा देता है। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु की प्रज्ञा महान थी। सत्यान्वेषी उनके चरण अनुस्त्रोत में नहीं चले। अनुशासन के साथ दर्शन, ज्ञान, चरित्राराधना की साथ का जो सूत्र आचार्य भिक्षु ने दिए उनका नाम है तेरापंथ।

साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी चैलनाश्री जी ने अपने विचार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने मर्यादा पत्र का वाचन किया। साध्वीवृंद ने बोधि दिवस के उपलक्ष्य में एक मधुर गीत का संगान किया।

इस अवसर पर सकल जैन श्रावक समाज की उपस्थिति रही। इस अवसर पर अनेक भाई-बहनों ने उपवास, जप, पौषद आदि अनुष्ठान किए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कन्हैयालाल गांधी ने किया।

प्रेक्षाध्यान से पाएँ मोक्ष नगर का मार्ग

भीलवाड़ा।

तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में डॉ० साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 'प्रेक्षाध्यान कार्यशाला' का समायोजन हुआ। डॉ० साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि make faiteful बनें, क्रोध विजय से। जब भी बाहर से आएँ तो बाह्य परिवेश की चींख-चिल्लाहट, टनटनाहट, झनझनाहट को रद्दी कागज की तरह डस्टबिन में डाल दें। शांति संपन्नता का राज, श्री संपन्नता का खजाना, धृति संपन्नता का साम्राज्य, आनंद संपन्नता की जीवनशैली हम श्वास प्रेक्षा के द्वारा पा सकते हैं। प्रसन्नता का प्रोटीन, विनम्रता का विटामिन, कार्यकुशलता का कार्बोहाइड्रेट, खुशमिजाज मूड का खनिजलवण, मृदुता के मिनरल्स और वात्सल्य की वसा प्रत्येक मानव के साथ रहे।

प्रेक्षावाहिनी की बहनों ने प्रेक्षागीत के द्वारा मंगलाचरण किया। अनिता हिरण ने उपस्थित जनमेदिनी को त्रिपदी वंदना करवाई। साध्वीवृंद ने प्रेक्षाध्यान गीत की प्रस्तुति दी।

डॉ० साध्वी परमयशाजी ने प्रेक्षाध्यान करवाकर भीतर की ओर का साक्षात्कार करवाया। विमला रांका ने कार्यक्रम का संचालन किया। जेठमल चौधरी ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

सेवा कार्य

चलथान।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा गरीब वर्ग के लोगों को फल-फ्रूट वितरण किया गया।

इस अवसर पर चलथान तेरापंथ सभा अध्यक्ष दिनेश बाबेल, सभा सहमंत्री बालचंद दक, तेयुप उपाध्यक्ष दीपक खाब्या, तेयुप संगठन मंत्री अशोक कुमठ, तेयुप सेवा प्रभारी कमलेश खाब्या, तेयुप संस्कार सह-प्रभारी निर्मल दक, तेयुप सदस्य महेश संचेती उपस्थित रहे।

त्रिदिवसीय जप अनुष्ठान

जोरावरपुरा।

तेरापंथ भवन में साध्वी सूरजप्रभाजी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय भक्तामर के प्रथम व द्वितीय श्लोक का मंत्र व ऋद्धि के साथ जय अनुष्ठान साध्वी डॉ० लावण्ययशा जी के द्वारा करवाया गया। साध्वीश्री जी ने बताया कि मंत्र साधना से मन एकाग्र होता है। आधी, व्याधि से ऊपर उठकर समाधी में प्रवेश करते हैं। अटके हुए काम सिद्ध होते हैं। इस जप अनुष्ठान में लगभग ८० भाई-बहनों की उपस्थिति रही। इसके साथ ही साध्वी डॉ० लावण्ययशा जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ रक्षा कवच बनाने की संपूर्ण विधि से लोगों को प्रशिक्षित किया। नोखा के मोहन जोशी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी भाई-बहनों ने रुचि से भाग लिया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति मंगल उद्गार

अर्हम्

● समणी प्रतिभाप्रज्ञा ●

साध्वीप्रमुखाश्री जी विश्रुतविभाजी का जीवन प्रारब्ध और पुरुषार्थ का अद्भुत संगम है। जिन्होंने संकल्प शक्ति के माध्यम से अनछुए क्षितिज हुए हैं। जिन्होंने आत्म विकास, ज्ञान विकास और संघ सेवा के लिए जीवन के समस्त लम्हों को बखूबी से समर्पित किया है। जिन्होंने तीन-तीन आचार्यों की कृपा से कर्तृत्व के अनमोल अवसर प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व को प्रभावित बनाया। समण श्रेणी की पहली किरण बन, प्रथम नियोजिका के रूप में श्रेणी को अनुशासन का पथ प्रदर्शित किया। यह समण श्रेणी जिनकी निर्माण भूमि और कर्तृत्व भूमि बनी वहीं से उत्तरोत्तर प्रकाशपुंज की दिशा में प्रवर्धमान रहते हुए श्रेणी आरोहण कर साध्वी विश्रुतविभा अभिधान को सार्थक किया है। पूज्य गुरुदेव श्री महाप्रज्ञ जी की कृति, मुख्य नियोजिका पद से शोभित विशिष्ट साधिका साध्वी विश्रुतविभाजी को वर्तमान अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उन्हें नमव साध्वीप्रमुखा पद पर नियुक्त कर धर्मसंघ को विशिष्ट सौगात प्रदान की है। पूरा साध्वी, समणी और नारी समाज उनका मार्गदर्शन प्राप्त कर आध्यात्मिक आरोहण करेगा, इसी मंगल संकल्प के साथ।

अर्हम्

● समणी हर्षप्रज्ञा ●

प्रत्येक व्यक्ति अनुशासन में रहकर ही गति-प्रगति कर सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्यों के अनुशासन में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ का अनुशासन तो शिष्यों का गुरु के प्रति सहज-स्वीकृत अखंड विश्वास और आत्मिक ऋजुभाव का प्रतीक है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी की अनुशासनमय चेतना का मैं अभिनंदन करती हूँ। आपका जीवन आत्मानुशासित है। आपकी नेतृत्व क्षमता बेजोड़ है। समय-प्रबंधन, आहार-संयम, श्रमनिष्ठा आदि विशेषताएँ उनकी अद्वितीय जीवनशैली है। आप लंबे समय तक हमारा नेतृत्व करते रहें, यही मंगलकामना–

खामोश बनकर जिसकी, हिफाजत हवा करे,
वो शमा क्या बुझे, जिसे खुद खुदा रोशन करे।।

अर्हम्

● समणी विपुलप्रज्ञा ●

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी खुली किताब है।
देदीप्यमान चेहरे पर महकते गुलाब सी आब है।।
पैनी दृष्टि, प्रखर प्रवक्ता सहज समर्पण अद्भुत भाषा।
एक शब्द में कहूँ तो आपश्री के जीवन की हर क्रिया लाजवाब है।।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी सचमुच परम भाग्यशाली व पुण्यशाली हैं क्योंकि आपने पूज्यप्रवरों के दिल में अपना स्थान बनाया है। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की असीम अनुकंपा व कृपा का सुपरिणाम है कि आज आप 'साध्वीप्रमुखा' के पद को सुशोभित कर रही हो। त्याग, तप व संयम की साधना के कारण आपश्री का उपादान कारण आत्मबल से युक्त है। आपश्री गुणवत्ता दिन-प्रतिदिन कुंदन की तरह निखर रही है।

आपश्री का स्वास्थ्य सदा निरामय रहे। आप दीर्घायु, चिरायु बनें। आपश्री की अनुशासना में हमारी आत्मसाधना निर्बाध चलती रहे।

अर्हम्

● समणी पुण्यप्रज्ञा ●

नवोदित नवम साध्वीप्रमुखा का करते हैं अभिवंदन।
विश्रुतविभा साध्वीगण आभा स्वीकारों सविनय वंदन।।
तुलसी गुरु की दूर दृष्टि का करते हम अभिनंदन।
समण श्रेणी के भाल तिलक को भावभरा है वंदन।।१।।

महाप्रज्ञ आभावलय से भावित पावन कुंदन।
साध्वीप्रमुखा गण आँगन में बरसो शीतल चंदन।।२।।

ज्ञान ध्यान के गंगोदक से महाप्रज्ञ विभ ने था सींचा।
अपरिमित उस कृपा भाव को तुमने भीतर था खींचा।।३।।

दिया महाश्रमण गुरुवर ने साध्वीप्रमुखा पद पावन।
गण में है अम्बार खुशी का जयकारी भैक्षव शासन।।४।।

शिखर चढ़ी सफलता के लेकर आध्यात्मिक बल ऊँचा।
वर्धापित करता है तुमको, समणी गण आज समूचा।।५।।

अर्हम्

● समणी शुभप्रभा ●

श्रम की तस्वीर हो तुम, हम सबकी तकदीर हो तुम।
वीर के पथ पर बढ़े हमे, ऐसा सुंदर पथ दिखलाना।।

आगम में नित गोत खा, जीवन के अमूल्य सूत्र सुनाती,
व्यवहार की धरा पे चलना हम सबको सदा सिखाती।
चले तेरे इशारों पर निरंतर, मंजिल अगर पाना।।

जुनून हो मन में अगर तो, क्या नहीं कर सकते हैं हम,
भर दो ऐसा संकल्प हममें, मनोबल न हो हमारा कम।
करे दृढ़-संकल्प हम, अहर्निश आत्म दीप जलाना।।

समण श्रेणी की नींव बन, सतत साधना के पथ खोले,
'कहं चरे कहं चिट्ठे' आगम वाणी से स्वयं स्वयं को तोले।
समय-समय पर पुनः हममें ये शुभ संस्कार भरना।।

अर्हम्

● समणी रोहिणीप्रज्ञा ●

पल अभिवंदन में हम शामिल
भीतर-बाहर उत्सव-उत्सव।
संघ-गगन में तारे झिलमिल
मनभावन पावन है पल नव।।

मधुरिम गीत मुखर होठों पर
मुस्कानों की मलयज फैली।
साध्वी प्रमुखा, गुरु-गरिमा वर
कीरत पसरी नयी नवेली।।

तुलसी महाप्रज्ञ ने सींचा
महाश्रमण ने दी नव आशा।
सक्षम हाथों सदा सवाया
संजीवन पा युग पातक हरषाया।।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी के प्रति

जाते हम बलिहारी

● साध्वी पंकजश्री ●

शासनश्री कैलाशवती जी, जाते हम बलिहारी।
धन्य-धन्य सतिवर तुमने, अनशन कर नैया तारी।
जय-जय शासनश्री जी की।।

कालू युग में जन्मे सतिवर, तुलसी से संयम पाया।
महाप्रज्ञ की कृपा भारी, अग्रणी पद सरसाया।
महाश्रमण के श्रीमुख से, पा शासनश्री सुखकारी।।

भैक्षव शासन, नंदनवन की, पायी शीतल छाया।
श्रद्धा सेवा और समर्पण से, जीवन महकाया।
ज्ञान ध्यान और तप से, जोड़ी आत्मा से एकतारी।।

ऋजुता मृदुता सहनशीलता, की खिलती फूलवारी।
असाध्य बीमारी में भी, कभी न हिम्मत हारी।
पापभीरूता सहज सरलता, थी अद्भुत तुम्हारी।।

माँ सी ममता मिली आपसे, कैसे भूल मैं पाऊँ।
चालीस बरस रही साथ में, अब मन कैसे मैं समझाऊँ।
याद सतावै पल-पल तेरी, ममतामय मूतर प्यारी।।

गुरु दृष्टि आराधन कर, क्षण-क्षण को सफल बनाएँ।
जन-जन में उत्साह जगाकर, सोये क्षेत्र जगाएँ।
एक प्रहर का अनशन कर, इच्छा मृत्यु है स्वीकारी।।

जो भी आता पास तुम्हारे, वो अपना बन जाता।
शांति पाठ, मांगलिक सुन, मन के इंद्र सभी को मिटाता।
सबकी श्रद्धा आस्था के तुम, बने सदा उपकारी।।

नई मुंबई वाशी में तुमने, नव इतिहास रचाया।
तेरापंथ समाज ने, मृत्यु महोत्सव अवसर पाया।
सतिवर दो, आशीष पंज को, खिले संयम की क्यारी।।

समता की अलख जगाई

● साध्वी ललिताश्री ●

समता की अलख जगाई।
शासनश्री कैलाशवती की महिमा चहुँदिशि छाई।।

गुरु तुलसी से दीक्षा लेकर जीवन को चमकाया।
भैक्षव शासन नंदनवन में, तुमने नाम कमाया।
महाश्रमण के श्रीमुख से, शासनश्री की पद्वी पाई।।

मिलन सारिता अद्भुत तेरी वाणी में मधुरता।
संघ संघपति पूर्ण समर्पित गुरु प्रति श्रद्धा निष्ठा।
शुद्ध संयम की करी साधना, आराधक पद के पाई।।

२७ वर्ष तक मिली सन्निधि, वत्सलता खूब है पाई।
जीवन जीने की शिक्षा देकर, अमृत घूँट पिलाई।
तेरे अनगिन उपकारों को मैं तो भूल न पाई।।

गुरु आज्ञा से पंकज श्री जी ने संथारा पचखाया।
महाव्रतों की कर आलोयणा, खमतखामणा कराया।
साध्वी ललिताजी को दे दो, दर्शन की तुम सांई।।

लय : संयममय जीवन हो---

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 अगस्त, 2022

✦ *अभय की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। भय और तनाव दुःख पैदा करता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला के आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

ओसवाल भवन में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप, दिल्ली के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी रतनश्री जी ने ओसवाल भवन, सूर्यनगर, लक्ष्मीनगर ज्ञानशाला के उपस्थित ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा के नियम करवाए एवं कहा कि आचार्य तुलसी एक दूरदृष्टा आचार्य थे। उन्होंने विकास के लिए अनेक उपक्रम दिए, उनमें एक है—मंत्र दीक्षा। इन छोटे-छोटे बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए ऐसा आयोजन अत्यावश्यक है। साध्वी सुव्रताजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए चार गति व आठ कर्मों के संदर्भ में जानकारी दी।

कार्यशाला का प्रारंभ तेयुप युवकों के विजय गीत से हुआ। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुमन सिंघी ने बच्चों को त्रिपदी वंदना करवाई। तेयुप, दिल्ली के मंत्री अभिनंदन बैद ने कार्यशाला विषय पर भाषण प्रस्तुत किया। शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद ने बच्चों में मंगल भविष्य की मंगलकामना की। तीनों क्षेत्रों के ज्ञानार्थियों की नाटक, गीत, संवाद के माध्यम से प्रस्तुतियाँ हुई।

तेमम, दिल्ली की मंत्री यश बोथरा, ज्ञानशाला परिवार से बजरंग कुंडलिया ने वक्तव्य दिया। शाहदरा सभा के मंत्री आनंद बुच्चा, संगठन मंत्री देवेंद्र पुगलिया, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ की उपस्थिति रही।

बच्चों को तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा पुस्तक, माला एवं गिफ्ट देकर उत्साहवर्धन किया। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला के सह-प्रभारी अमित सुखानी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन पवन श्यामसुखा ने किया।

वाशी

बच्चों में सुसंस्कारों के बीजारोपण एवं अध्यात्म के भाव प्रबल हो इस हेतु तेयुप ने मंत्र दीक्षा संग वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया। मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। त्रिपति एवं गुरु वंदना नम्रता कांठेड ने करवाया। मंगलाचरण ज्ञानशाला प्रशिक्षक एरोली द्वारा किया गया।

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में कार्यक्रम के अंतर्गत कुल १९६ बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। साध्वी पंकजश्री जी ने मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी।

परिषद के अध्यक्ष महावीर सोनी ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा मंत्र दीक्षा के बारे में जानकारी दी। तेयुप मंत्री महावीर हिरण ने बताया कि वीतराग पथ कार्यशाला में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रेरणादायी नाट्य प्रस्तुति ज्ञानशाला कोपरखैरना ने दी। साध्वी शारदाप्रभाजी ने वीतराग कार्यशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

साध्वी सम्यक्यशा जी ने अपना उद्बोधन दिया। साध्वी ललिताश्री जी ने मंत्र दीक्षा का इंटरव्यू दिया, जानकारी बताई। मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति संपतलाल बागरेचा, लादूलाल, सोहनलाल कोठारी, अमृतलाल खाटेड़, दिनेश छाजेड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन भिक्षु जोन संयोजिका पिंकी कोठारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षक नीतू परमार ने किया।

पर्वत पाटिया

बच्चों में सुसंस्कारों के बीजारोपण एवं अध्यात्म के भाव प्रबल हो इस हेतु अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने मंत्र दीक्षा संग वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया।

प्रवक्ता एवं उपासक दिनेश राठौड़ के सान्निध्य में कार्यक्रम के अंतर्गत ५० बच्चों ने नमस्कार महामंत्र से सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। परिषद के अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया ने मंत्र दीक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यक्रम में सभा के वरिष्ठ श्रावक ज्ञानचंद कोठारी, निवर्तमान अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, संगठन मंत्री पवन बुच्चा, प्रवीण ओस्तवाल, संयोजक हरीश बाफना, यश सिंघवी, निवर्तमान महिला मंडल अध्यक्षा कुसुम बोथरा, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका प्रिया पुगलिया, ज्ञानशाला की समस्त प्रशिक्षिकाएँ, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के ११० बच्चों की विशेष गरिमामय उपस्थिति रही।

अंत में आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विनय जैन एवं कार्यक्रम का संचालन तेयुप सहमंत्री रवि मालू ने किया।

इचलकरंजी

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी प्रमिला कुमारी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेयुप के अध्यक्ष महेश पटवारी ने सभी का स्वागत किया एवं मंत्र दीक्षा के बारे में जानकारी दी।

अभातेयुप के कार्यकारिणी सदस्य एवं इचलकरंजी तेयुप के प्रभारी मनोज संकलेचा ने हर साल मंत्र दीक्षा क्यों होती, किसलिए होती इसके बारे में जानकारी दी।

ज्ञानशाला के बच्चों ने अपने संवाद द्वारा नमस्कार महामंत्र के महत्त्व को इतिहास की कुछ घटनाओं की प्रस्तुति दी। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा का महत्त्व समझाया। कुल ५५ बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई। जिसमें जयसिंहपुर के बच्चों की भी सहभागिता रही।

साध्वी आस्थाश्री जी ने वीतराग का विज्ञान के विषय में विस्तार से जानकारी दी। साध्वी विज्ञप्रभाजी ने वीतराग की अनुप्रेक्षा करवाई।

तेयुप पूर्व अध्यक्ष प्रवीण भंसाली ने अपने भावों से कार्यक्रम के प्रति अनुमोदना व्यक्त की। कार्यक्रम के संयोजक अनूप आंचलिया ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम की आयोजना में सह-संयोजक अंकित छाजेड़ का श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन तेयुप उपाध्यक्ष संतोष भंसाली ने किया।

सिरसा

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में ११ बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। साध्वी सुमनश्री जी ने इस अवसर पर अपने प्रवचन में मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी।

कार्यक्रम के दौरान परिषद मंत्री कुणाल नौलखा ने बताया कि वीतराग पथ कार्यशाला में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रेरणादायी नाट्य प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में तेरापंथ समाज के गणमान्य व्यक्तियों के साथ काफी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

तिरुपुर

अभातेयुप के निर्देशन में तिरुपुर तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में उपासिका मधु कोठारी ने संपादित किया। उपासिका मधु कोठारी ने ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा के महत्त्व के बारे में बताया एवं उन्हें मंत्र दीक्षा दिलवाई।

आज राजमार्ग है तेरापंथ

टी-दासरहल्ली।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में २६३वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस समारोह का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल ने भिक्षु अष्टकम का संगान कर मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा, ट्रस्ट अध्यक्ष नवरतन गांधी ने वक्तव्य के साथ अपनी भावना रखी।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि गुरु पूर्णिमा का पावन दिन, २६३ वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने केलवा राजस्थान की अंधेरी ओरी में, महाविदेह में विराजमान सीमंधर भगवान को साक्षी मानकर पुनः स्वयं बारह श्रमणों के साथ चरित्र का प्रत्याख्यान किया। आचार्य भिक्षु कंटकाकीर्ण मार्ग पर चले, पर आज वह राजमार्ग बन गया।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने स्वयं द्वारा प्रवर्तित तेरापंथ धर्मसंघ में साधु-साध्वियों को एक आचार्य की अनुशासना में चलने का संविधान दिया। साध्वी उदितप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के महान व्यक्तित्व पर विचार रखे।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्री जी ने गीत का संगान किया।

इस अवसर पर तेयुप ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा, गांधीनगर के निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश दक ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की। सभा ट्रस्ट निवर्तमान अध्यक्ष लादुलाल बाबेल, महिला मंडल अध्यक्षा रेखा मेहर ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में समस्त जैन श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कन्हैयालाल गांधी ने किया।

सम्यक्त्व को निर्मल रखने के लिए...

(पृष्ठ १६ का शेष)

ज्योतिपुंज ने कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि पूज्य डालगणी का युग चल रहा है। डालगणी के मन में माणकगणी के बाद की व्यवस्था की जानकारी लेने की इच्छा हुई। उन्होंने मुनि मगनलालजी से सारी बात जानने का प्रयास किया, उस प्रकरण को विस्तार से समझाया कि किस तरह से डालगणी ने मगन मुनि से उनके मन की बात को जाना।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि एक गुरु कार्य है—आत्मा को जानना। आत्मा को जानने के लिए बाहर और भीतर की दुनिया को समझना होता है। बाह्य जगत में आकर्षण है, पर हमें भीतरी जगत में आकर्षण रखना चाहिए। अंतर्जगत का चिंतन अंतर्मुखी होता है। हमें चिंतन करना है कि हम शारीरिक स्तर पर जी रहे हैं या भीतरी स्तर पर जी रहे हैं। हमारा दृष्टिकोण सम्यक् हो। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने सूत्र दिया था—रहो भीतर, जीयो बाहर। धर्म है, भीतर रहना। जो भीतर रहता है, वह धर्म की आराधना करता है। हमें ध्यान के द्वारा भीतर अंतर्जगत की यात्रा करनी चाहिए।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि तीर्थंकर धर्मज्ञाता, धर्मधुरी एवं साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूपी तीर्थ की स्थापना करने वाले होते हैं। उनके आठ प्रतिहार्य होते हैं, जिनको विस्तार से समझाया। भगवान अर्ध मागधी भाषा में प्रवचन करते हैं।

मालवा क्षेत्र के रतलाम व अन्य क्षेत्रों से एक विशाल संघ लगभग २५० श्रावक-श्राविकाओं के साथ गुरु सन्निधि में २०२४ के चतुर्मास हेतु अर्ज करने श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। न्यायालय के रूप में चतुर्मास अर्ज के लिए अच्छी प्रस्तुति हुई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए प्रस्तुति की सराहना की। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि २०२४ के चतुर्मास की घोषणा ५ सितंबर को करने का तय किया हुआ है। आप प्रतीक्षा करें।

साध्वी सुषमाकुमारी जी ने तपस्या की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने आचार्य भिक्षु एवं श्रावक शोभजी के नाथद्वारा जेल के प्रसंग को समझाया।

जीवन में प्राप्त सुख-दुख का कारण...

(पृष्ठ १६ का शेष)

बड़ी दीक्षा आयोजन

संयम प्रदाता आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित साध्वी मुक्तिप्रभाजी व साध्वी प्राचीप्रभा जी को सात दिन बाद छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण कराते हुए बड़ी दीक्षा प्रदान करवाई। पाँच महाव्रतों एवं छठे रात्रि भोजन विरमण व्रत का तीन करण तीन योग से प्रत्याख्यान करवाया।

दोनों साध्वियों ने समूह रूप में अपने सात दिन के अनुभव श्रीचरणों में व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि प्राणी कर्म बंध करके अनेक योनियों में संसार में भटकता रहता है।

तेयुप शपथ ग्रहण-मंत्र दीक्षा-वीतराग पथ कार्यशाला

विद्या नगरी में आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल का लोकार्पण

कोटा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में कोटा, तेयुप द्वारा अणुव्रत भवन में वीतराग पथ कार्यशाला, मंत्र दीक्षा, तेयुप शपथ ग्रहण एवं आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल के लोकार्पण का कार्यक्रम संपादित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज कोटा तेयुप ने एक साथ चार कार्यक्रमों की संयोजन कर कार्यक्रमों का चौका लगाया है। अब चौका नहीं जीवन में संयम का छक्का लगाने की तैयारी करनी है। उसके लिए संस्कारों के संवर्धन की आवश्यकता है, ज्ञानशाला संस्कारों के संवर्धन की कार्यशाला है। संयम के बीजों का वपन बचपन में ही हो सकता है। बचपन में वपित बीज पल्लवित व पुष्पित होकर वटवृक्ष बनकर सबको शीतल छाया प्रदान कर सकते हैं।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने नव मनोनीत अध्यक्ष आनंद दुगड़ को अध्यक्ष पद की शथ दिलाई एवं आनंद ने अपनी पूरी टीम व कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाई।

आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल का लोकार्पण

साध्वीश्री जी ने कहा कि कोटा जैसी छोटी-सी परिषद ने हॉस्टल का काम कर अभातेयुप के इतिहास में स्वर्णिम आलेख लिखा है।

आचार्य तुलसी के नाम से बना यह हॉस्टल विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार देने का भी काम करें। आनंद दुगड़, तेयुप टीम अरुणेश कांठेड़ व विनय दुगड़ का श्रम मुखर हुआ है। उनके सम्यक् श्रम की निष्पत्ति है हॉस्टल का लोकार्पण।

हॉस्टल परिसर में जैन संस्कार विधि से लोकार्पण हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि साध्वी अणिमाश्री जी को मैं हमारे धर्मसंघ की ऋतंभरा कह सकता हूँ। आपकी विशिष्ट प्रवचनशैली ने जन-जन को दिशा बोध दिया है। आपने अनेक कार्यकर्ताओं का निर्माण कर तेयुप को मजबूती प्रदान की है। आपके सान्निध्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की विशिष्ट गरिमा होती है।

पंकज डागा ने कहा कि वीतराग पथ कार्यशाला संयम के तीन संस्कारों के पल्लवन का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है—घर-परिवार में अगर कोई बालक या बालिका संयम पथ पर अग्रसर होने की भावना रखे तो उन्हें सहयोग दें, आज सब कुछ हो और संस्कार नहीं हो तो जीवन बेकार हो जाएगा। बच्चों की जीवन बगिया में संस्कारों का पानी निरंतर मिलता रहे, इसके लिए अपने बच्चों को ज्ञानशाला में जरूर भेजें। उन्होंने कहा कि मंत्र दीक्षा अध्यात्म के संस्कारों की दीक्षा है। कोटा तेयुप ने स्वल्प समय में आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल का बड़ा काम किया है। कोटा में संभावना और ज्यादा है।

राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि अभातेयुप के इक्कीसवें अध्यक्ष को पूज्यप्रवर द्वारा इक्कीसवें आयाम द्वारा मुमुक्षु तैयार करने का कार्यभार प्राप्त हुआ है। इसलिए तेयुप वीतराग पथ कार्यशालाओं का आयोजन कर रही है। हर व्यक्ति को वीतराग पथ की जानकारी हो एवं निष्पत्ति भी आए। हॉस्टल निर्माण के लिए कोटा, तेयुप को बधाई दी।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि सबसे कठिन काम है अपनी पहचान बनाना। हम स्वयं के द्वारा अपनी पहचान बनाएँ।

साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली संस्था ने अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से संघ के गौरव को अभिवर्धित किया है।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि आज के बालक कल के समाज व राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे इनको संस्कारित करना पूरे परिवार के भविष्य को उज्ज्वल बनाना है।

साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। हॉस्टल के राष्ट्रीय प्रभारी नरेश चपलोत, कोटा, तेयुप प्रभारी विपिन पितलिया ने भावों की प्रस्तुति दी। युवक रत्न राजेंद्र सेठिया ने विचार रखे।

तेयुप अध्यक्ष आनंद दुगड़ ने स्वागत भाषण दिया। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा ने विचार रखे। अरुणेश कांठेड़ ने हॉस्टल के बारे में बताया।

शशि, पूर्वा एवं शीतल सुराणा ने मुनि अनाथी की नाटिका प्रस्तुत की। आभार ज्ञापन मंत्री कमलेश जैन ने किया। सभा द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया।

सम्यक्त्व को निर्मल रखने के लिए कषायमंदता आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २४ जुलाई, २०२२

परम ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्नोत्तर करने का क्रम चल रहा है। ज्ञान वृद्धि का एक माध्यम है कि प्रश्न हो, और फिर समाधान दिया जाए। कई बार एक आदमी प्रश्न पूछता है, उसका समाधान मिलता है, साथ में दूसरों को भी उसकी जानकारी हो जाती है।

प्रश्न पूछने वाला तो स्वतंत्र होता है और जबाव देने वाला कुछ परतंत्र हो जाता है। जवाब देने वाले को तो प्रश्न पूछने वाले के प्रश्न का जवाब देना होगा। भगवती सूत्र में प्रश्नोत्तर के माध्यम से अनेक-अनेक समाधान, जानकारियाँ देने का प्रयास किया गया है। प्रश्नकर्ता भी मुख्य रूप में गौतम स्वामी है।

प्रश्नकर्ता जानकार व्यक्ति हो तो उत्तर देने वाला ध्यान देकर उत्तर देता है। परंतु उत्तर देने वाले सर्वज्ञ हो तो क्या ध्यान देने की जरूरत है। यहाँ प्रश्न किया गया है कि क्या वही सत्य और निशंक है, जो जिनों-अर्हतों द्वारा प्रवेदित है? उत्तर दिया गया हाँ गौतम वही सत्य है, जो जिनेश्वरों द्वारा प्रवेदित है।

सच्चाई के अन्वेषण की दृष्टि से और सच्चाई की भक्ति करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बात बताई गई है कि कई बार हर किसी बात का निर्णय करना कठिन हो सकता है। ऐसी स्थिति में श्रद्धा सही कैसे रह सकती है? हम अल्पज्ञ हैं, सच्चाईयाँ अनंत हैं। कई बातें हमारे सामने प्रत्यक्ष है, भी नहीं। जैसे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय।

ज्ञेय जो जानने योग्य पदार्थ है, वे तीन प्रकार के बताए गए हैं। एक है—सुखाभिगम जो सरलता से, आसानी से जाना जा सके। दूसरा है दुर्भिगम-जिसको जान पाना कठिन होता है। तीसरा है—अनभिगम-वह ज्ञेय जो हमारे लिए प्रत्यक्ष जान पाना कठिन है, जो परोक्ष ज्ञान है, मति-श्रुत ज्ञान से जाना नहीं जा सकता है। सुखाभिगम जो है, उनमें शंका करने की स्थिति नहीं है। दुर्भिगम में थोड़ी शंका की स्थिति हो सकती है। अनभिगम तो मानो शंका से भरा पड़ा है।

दुनिया में इतने-इतने दर्शन व मान्यताएँ हैं। सबका अपना-अपना सिद्धांत-मान्यता है। जिनेश्वर भगवान तो सामने है नहीं जो यह बता सके कि यह बात ऐसे है। इसमें मेरी श्रद्धा यह रहे कि सारी बातों का निर्णय करना मेरे लिए कठिन है। जिनेश्वर भगवान ने जो देख लिया, जान लिया वो सत्य है, उसमें मुझे शंका नहीं। दुनिया में जो सही है, सत्य है, उसको मेरा समर्थन है।

मेरी बात बताने में गलती हो सकती है, पर जिनेश्वर भगवान ने जो बताया है, वही सत्य है, उसमें मेरी श्रद्धा है। इसमें शंका नहीं। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने बताया है कि दो प्रकार के पदार्थ होते हैं—हेतु गम्य और अहेतु गम्य। कई-कई बातों को तर्क से, हेतु से जानने का, सिद्ध करने का प्रयास किया जा सकता है। कई चीजें हेतु से सिद्ध करनी, कठिन हो सकती हैं।

जो इंद्रिय-ज्ञान की सीमा में आने वाली चीजें हैं, उनको हेतु से, तर्क से सिद्ध किया जा सकता है। जो इंद्रिय ज्ञान की सीमा से परे है, वो अहेतुगम्य है, सिद्ध नहीं किया जा सकता है। जो सूक्ष्म चीजें हैं, इंद्रियों द्वारा गम्य नहीं है, वे अहेतुगम्य है। परमाणु, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अहेतुगम्य है। इनको सिद्ध करना मुश्किल है। जो जिनेश्वर भगवान ने प्रवेदित किया वो सत्य है।

ये सम्यक्त्व को निर्मल रखने की बात है कि केवली की बात पर श्रद्धा रखो। हमारी अपनी बात में गलती हो सकती है, केवली की बात में नहीं। सम्यक्त्व को निर्मल रखने के लिए कषायमंदता करो। तीसरी बात है—तत्त्व बोध को जानने-समझने का प्रयास करो, नई बात सामने आ सकती है। तत्त्वज्ञान का प्रयास करते रहें तो हमारे यथार्थ बोध की स्थिति उच्च और निर्मल हो सकती है। जिनेश्वर भगवान ने जो बात कही है, उसको मानने वाला ज्ञान का आराधक होता है। इस आलंबन के द्वारा आराधक की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 अगस्त, 2022

✦ *संप्रदाय के व्यामोह में फँसकर सत्य से दूर जाना तुच्छ बात होती है। वीतरागता की साधना के लिए संप्रदाय आत्यंतिक नहीं, सहायक साधन होता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन में प्राप्त सुख-दुख का कारण होते हैं कर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २० जुलाई, २०२२

आत्म रमण के साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का विवेचन करते हुए फरमाया कि भगवती आगम के ५६वें सूत्र में कहा गया है कि दार्शनिक और धार्मिक जगत में यह बात आती है कि आदमी को सुख-दुःख किस कारण मिलते हैं? संसार में तीन अवधारणाएँ है, चलती हैं–ईश्वरवाद, अज्ञातवाद और कर्मवाद। जैन दर्शन कर्मवाद की अवधारणा को मानने वाला धर्म है।

कर्मवाद के सिद्धांत के विषय में भगवती सूत्र में एक प्रश्न किया गया है कि जीव स्वयंकृत कर्म को भोगते हैं, यह बात सही है क्या? इसके उत्तर में कहा गया–कुछ भोग लेते हैं, कुछ नहीं भी भोगते हैं। यह कैसे? इसका उत्तर दिया गया कि कर्म जो उदय में आ गया, उसको भोगते हैं। उदय में नहीं आया उसको नहीं भोगते।

जैन आगम वाङ्मय और अन्य ग्रंथों में भी कर्मवाद पर प्रकाश डाला गया है। कि एक जन्म में जितने कर्म किए हैं, वे सारे एक जन्म में भोग लेगा, यह बात सर्वत्र लागु नहीं है। जो-जो उदय में आएँगे उनको भोगेगा। हो सकता है कि कई जन्मों के संचित कर्म हैं, वे अभी उदय में नहीं आए हैं। दूसरी बात यह भी है कि कर्म किया तो है, पर उसकी तपस्या के द्वारा निर्जरा कर दी तो फिर भोगना नहीं पड़ेगा। परंतु वह स्वयं का किया हुआ ही भोगेगा।

कर्मवाद का सिद्धांत है–जैसी करणी, वैसी भरणी। जैन दर्शन में आठ कर्म बताए गए हैं, वे दो भागों में विभक्त है–घाति कर्म और अघाति कर्म। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय ये चार घाति कर्म हैं। शेष चार कर्म अघाति हैं। घाति कर्म ही ज्यादा नुकसान देते हैं। ये आत्मगुणों का घात करने वाले हैं। अघाति कर्म ज्यादा नुकसानदेह नहीं हैं। ये पुण्य-पाप से अनुकूलता-प्रतिकूलता भले पैदा कर दें पर और ज्यादा आत्मा का नुकसान करने वाले नहीं हैं।

चार घाति कर्म है, उनमें भी ज्यादा नुकसानदेह मोहनीय कर्म है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय ये मोहनीय कर्म न हो तो क्या ये बंधेंगे, बंधेंगे भी नहीं। हम प्राणियों के जीवन को, कर्मवाद में विश्लेषित कर सकते हैं। कईयों का ज्ञानात्मक विकास नहीं होता है, इसका कारण ज्ञानावरणीय कर्म का उदय ज्यादा है। उम्र के साथ विकास नहीं होता है।

कई तीक्ष्ण-कुशाग्र बुद्धि वाले होते हैं, इसका मतलब है, उनके ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम अच्छा है, तभी उनका ज्ञानात्मक-बौद्धिक विकास हो रहा है। क्षमता अच्छी है। कईयों का स्वास्थ्य अच्छा होता है, उनके सात वेदनीय का योग अच्छा है। कोई-कोई आदमी आए दिन बीमार रहता है, इसका मतलब उसके असातवेदनीय का योग है, इसलिए वह कष्ट पा रहा है।

एक आदमी शांत स्वभाव का है, मिलनसार है, मानना चाहिए मोहनीय कर्म हल्का है। कोई आदमी गुस्से में आ जाता है, लालची, धोखेबाज है, उसके मोहनीय कर्म भारी हैं, विकृत है। एक आदमी लंबे आयुष्य वाला है, उसके आयुष्य कर्म अच्छा है। किसी का जीवन कष्टमय है, वह जल्दी मर भी जाता है, तो आयुष्य कर्म की स्थिति ठीक नहीं है।

एक आदमी की समाज में बड़ी प्रतिष्ठा है, सम्मान मिलता है, उसके पुण्यवत्ता अच्छी है। शरीर सुंदर है, तो शुभ नाम कर्म का उदय है। नाम-गौत्र कर्म अनुकूल है, उनके बाह्य अनुकूलताएँ हैं। किसी को सम्मान नहीं मिलता है, शरीर भी सुंदर नहीं है। जाति कुल भी ठीक नहीं है, उसके नाम-गौत्र कर्म की अशुभता है। पाप का उदय है। यों हम कर्मों के आधार पर आदमी के जीवन की व्याख्या कर सकते हैं।

पुण्य का योग है, पर बीच में कष्ट भी आ जाए। पुण्य का योग ठीक है, तो आदमी उच्च पदों पर भी आ सकता है। ज्योतिष और कर्मवाद की भी समीक्षा की जा सकती है। कर्म ग्रंथों में कर्म की बात मिलती है। पता नहीं कौन सा कर्म कब उदय में आ जाए। इस जन्म में भले पाप कर्म ज्यादा नहीं, पर पूर्व जन्मों के पाप-कर्म उदय में आ सकते हैं। पुण्य भी उदय में आ सकते हैं। आकाश में पत्थर फैंका तो वो तो नीचे गिरेगा ही। नहीं फैंकेंगे तो नहीं गिरेगा। जो कर्म किए हुए हैं, वो तो भोगने पड़ेंगे ही।

पुण्य पाप दोनों को भोगना ही पड़ता है। पुण्य का उदय हो तो आदमी छोटी उम्र में सम्मान प्राप्त कर सकता है, जैसे गुरुदेव तुलसी २२ वर्ष की उम्र में ही आचार्य बन गए थे। पुण्य का योग हो तो भी आदमी प्रमाद में ज्यादा न जाए। पुण्य से धन-संपदा भी मिल जाती है, पर उसमें भी आदमी सादगी-शालीनता संयम रखे। मद में न चला जाए, पाप न करे। वरना वह पाप व दुर्गति की ओर ले जाने वाला हो सकता है।

पुण्य का उदय भी कब तक रहेगा, पता नहीं है। आदमी नीचे भी चला जाता है। पाप के उदय में भी आदमी समता-शांति रखें, ये दिन भी चले जाएँगे। इस तरह यह कर्मवाद का सिद्धांत है। भगवती सूत्र में कहा गया है, जीव स्वयं कृत कर्म को भोगता है और सारे कर्म इसी जन्म में भोग लेगा, ये जरूरी नहीं है। जिन कर्मों की निर्जरा हो गई, उनको भी नहीं भोगना पड़े। जतन देवी छाजेड़ ने अठाई का प्रत्याख्यान लिया।

कालूयशोविलास की व्याख्या करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि मुनि कालु पूज्य मघवागणी की छत्रछाया में पल रहे हैं, अध्ययन कर रहे हैं। विनय-विवेक मुनि कालू में हैं। मघवागणी के साथ थली के क्षेत्रों की यात्रा कर रहे हैं। गुरु की गरिमा महान होती है, वे शिष्य पर स्नेह की वर्षा करते रहते हैं। मुनि कालू को आगम अध्ययन के बाद संस्कृत भाषा का ज्ञान मघवागणी करा रहे हैं, व्याकरण सिखा रहे हैं। छोगांजी भी मुनि कालू के प्रति जागरूक है। मुनि मगनलालजी भी मित्रवत मुनि कालू का ध्यान रखते हैं। (शेष पृष्ठ १४ पर)

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी का देवलोकगमन

मुंबई।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी का जन्म वि०सं० १९९२ कार्तिक शुक्ला पंचमी 'सिसाय हरियाणा' अग्रवाल सिंगला परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम ताराचंद एवं माता लक्षिमदेवी जैन था।

आपने वि०सं० २००७, पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश, तीन वर्ष में तीन परीक्षाएँ दी एवं घर में पाँच कक्षा पास की।

आपने वि०सं० २०१० कार्तिक कृष्णादसम् जोधपुर में आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से १८ वर्ष की उम्र में दीक्षा ली।

२७ वर्ष तक साध्वी रायकंवर जी के सिंघाड़े में रही, उसके बाद साध्वी क्षमाश्री जी (सरदारशहर) वालों के साथ २१ वर्ष रही। इस प्रकार एक ही सिंघाड़े में ४८ वर्षों तक साधनारत रही।

अग्रगण्य : वि०सं० २०५८ में क्षमाश्रीजी का हिसार में स्वर्गवास हो गया, तत्पश्चात् आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने (वि०सं० २०५८) सन् १७ जनवरी, २०२२ में अग्रगण्य बना दिया।

अलंकरण : वि०सं० २०७४, माघ शुक्ला सप्तमी आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा सिलीगुड़ी में 'शासनश्री' अलंकरण प्रदान किया गया।

संघ में दीक्षित परिजन : मुनि मानस कुमार जी एवं साध्वी विद्याकंवर जी।

साधना : प्रतिवर्ष वर्षों तक सवा लाख भिक्षु का जाप और पाँच वर्षों से दो महीने में सवा लाख जाप करते, ६ महीने में साढ़े सात लाख जाप करते। लगभग प्रतिदिन १०००-१२०० गाथा स्वाध्याय। एक घंटा का नवकार मंत्र जप। प्रतिदिन दो श्रुत सामायिक। दो घंटे मौन।

तपस्या : अठाई एक, चोला, तेला ३१, बेला ३७, उपवास ४२३६, एकाशन ६६, दशपूत्याख्याण २ बार।

विशेष प्रतिमास महीने में छह उपवास और प्रतिवर्ष एक तेला संवत्सरी पर। आपका संयम पर्याय ६९ वर्ष का रहा।

यात्रा : राजस्थान मेवाड़, मारवाड़ थली, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, मराठवाड़ा, मध्य प्रदेश, मेवाड़, गुजरात, चंडीगढ़, दिल्ली, जयपुर, छत्तीसगढ़, मुंबई, बिहार।

कंठस्थ ज्ञान : आगम तीन, पच्चीस बोल आदि तेरह थोकड़े, २१ आगम का वाचन किया।

कला : सिलाई, रंगाई आदि।

स्वयं के करकमलों से दीक्षा संथारे : साध्वी कैलाशवती जी ने अपने जीवन में लगभग सात संथारे करवाने का सौभाग्य प्राप्त किया और महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की आज्ञा से 'साध्वी सौम्यमूर्ति' जी जो मुनि दिनेश कुमार जी का माता को दीक्षा देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सूरत महानगरी में एक साथ दो-दो संथारे करवाकर संघ प्रभावना में निमित्त बनी।

चौविहार संथारा : आपने नवी मुंबई चातुर्मास प्रवेश से एक दिन पूर्व ८ जुलाई, २०२२ को प्रातः ३ बजकर नौ मिनट पर आचार्यश्री महाश्रमण जी की आज्ञा से साध्वी पंकजश्री जी ने संथारा करवाया और चढ़ते परिणामों से ६ बजकर २९ मिनट पर चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया और आपने लगभग एक प्रहर (३-३० घंटे) संथारे में महाप्रयाण किया। आपको चौविहार अनशन लगभग १२ मिनट का आया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**